॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 137 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अक्टूबर– 2019 30/–प्रति

"अतः मैं संसार के सभी धर्मों के सकारात्मक लोगों को सच्चाई जानने के लिए सप्रेम आमंत्रित करता हूँ। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि मेरे माध्यम से जो शक्ति, ईश्वर कृपा और मेरे संत सद्गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण प्रकट हो रही है, सार्वभौम है। उस पर किसी भी धर्म विशेष, जाति विशेष या देश विशेष का एकाधिकार नहीं है।"

– समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

## सद्गुरुदेव सियाग का अवतरण दिवस

जोधपुर आश्रम में 24 नवम्बर 2019 को
सुबह 10.30 बजे मनाया जायेगा।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?
**प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?**

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। ( अपने घर बैठे ही )

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

www.the-comforter.org

# "जो झुकेगा वो ही पायेगा!"

मुझमें गुरुत्वाकर्षण आ गया, 'गुरु' के आशीर्वाद से।
ये गुरुत्वाकर्षण ही लोगों को खींच रहा है।

मुझमें एक ऐसा परिवर्तन आ गया, इनोसेन्ट वे ( निर्दोष तरीका ) में आ गया। यह मैं नहीं बनना चाहता था। मुझमें एक गुरुत्वाकर्षण पैदा हो गया। मेरा छोटा ही छोटा लड़का, जो अब जोधपुर में रह रहा है। जब मेरे से, ज्यादा उम्र के लोग पैरों के हाथ लगाने लगे तो उसने कहा-"आप यह क्या कर रहे हो ?

मैंने कहा-'क्यों' ?

कहने लगा-बूढ़े लोग आपकी तरफ क्यों झुकते हैं ?

छोटे बच्चे हो तो कोई बात नहीं !

मैंने कहा कि बेटा 'मेरे में एक गुरुत्वाकर्षण आ गया !'

एक चुम्बक का टुकड़ा पड़ा था, जो पिनों के पैकेट पर रख दिया तो गुच्छा चिपक गया।

मैंने पूछा-इनको कौन पकड़ता है ? जवाब दिया-ये तो गुरुत्वाकर्षण है। मैंने कहा-फिर पीतल वाले को क्यों नहीं पकड़ता ?

जवाब नहीं !

तब मैंने कहा बेटा ! रावण, कंस और दुर्योधन आदि क्या नहीं जानते थे कि वह कौन हैं ?

मगर वो नहीं झुके ! "जो झुकेगा वो ही पायेगा !"

मुझमें गुरुत्वाकर्षण आ गया, 'गुरु' के आशीर्वाद से। ये गुरुत्वाकर्षण ही लोगों को खींच रहा है।

संदर्भ-जोधपुर आश्रम में शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम-18 जून 2009

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः''

# स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 137 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका अक्टूबर – 2019

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
**Spiritual Science**
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

## अनुक्रम

सुदर्शन चक्र.....4
जीवन में सद्गुरु की भूमिका (सम्पादकीय).....5
अवतरण दिवस– 24 नवम्बर–2019.....6
अतिमानस–सूर्य का उदय.....7
ईश्वरीय इच्छा का मूर्तरूप.....8
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....9
गुरुदेव सियाग सिद्धयोग.....10–18
चित्र पृष्ठ.....19–23
सिद्धयोग.....24
सद्गुरुदेव का प्रवचन.....25
अपने धर्म में मरना सर्वोत्तम (कहानी).....26–28
Beginning of my Spiritual Life.....29
योग के आधार.....30
योगियों की आत्मकथा.....31
भगवान् की अवतरण–प्रणाली.....32
ज्ञान का लक्ष्य.....33
योग के बारे में.....34
एक विचार.....35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....36–37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

# ''सुदर्शन चक्र''

''सुदर्शन चक्र रूपी अमोघ अस्त्र से बचने की सामर्थ्य, संसार की किसी भी शक्ति में नहीं हैं, मैंने मेरा कार्य आरम्भ कर दिया है। भविष्यवाणी नहीं, भविष्यवक्ता पैदा करने आया हूँ। सच्चाई की पुष्टि समय करेगा।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

# जीवन में सद्गुरु की भूमिका

**संसार में एक वस्तु से दूसरी वस्तु में रूपान्तरण, परिवर्तन या बदलाव के लिए दूसरी वस्तु की जरूरत पड़ती है। लोहे को आकार देने के लिए लुहार घण अर्थात् बड़ी हथौड़ी का प्रयोग करता है। कुम्हार मिट्टी को घड़े व अन्य बर्तनों का आकार देने के लिए लकड़ी के 'थापे' का प्रयोग करता है। अन्दर हाथ पसार के, बाहर से चोट मारता है। उसी प्रकार मनुष्य, ईश्वर का स्वरूप है। वह वापस ईश्वर कैसे बन सकता है? उनमें वापस कैसे मिल सकता है? जहाँ से बिछुड़ा है, वहाँ का मार्ग कौन बता सकता है? मनुष्य को ईश्वर से मिलाने का जो काम करता है, वह कौन है? वह है -सद्गुरु। सद्गुरु मानव देह में साक्षात् भगवान् ही होते हैं। लेकिन मनुष्य के पूर्ण विकास के लिए, वे मनुष्य रूप में धरती पर प्रकट होते हैं। नर को नारायण का रूप देने के लिए, मनुष्य का चोला ओढ लेते हैं। साधक के पूर्ण विकास में आध्यात्मिक गुरु की क्या भूमिका होती है, इस संबंध में स्वामी विवेकानन्द ने विस्तार से सद्गुरु और शिष्य के बारे में समझाया है।**

''यह निश्चित है कि प्रत्येक आत्मा को पूर्णता की प्राप्ति होगी और अन्त में सभी प्राणी, उस पूर्णावस्था को प्राप्त करेंगे। हम इस समय जो भी हैं, वह हमारे पिछले अस्तित्व और विचारों का परिणाम है तथा हमारी भविष्य की अवस्था, हमारे वर्तमान कार्यों और विचारों पर अवलम्बित रहेगी। **किंतु इससे हमारे लिए दूसरों से सहायता प्राप्त करना वर्जित नहीं हो जाता।** किसी **बाह्य** सहायता से **आत्मशक्तियों** का विकास अधिक **तेजी** से होने लगता है।

अतः संसार के अधिकांश मनुष्यों के लिए बाह्य सहायता की प्रायः अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है। हमारे विकास को स्फुरित करने वाला प्रभाव बाहर से आता है और हमारी प्रसुप्त शक्तियों को जगा देता है। तभी से हमारी उन्नति का प्रारम्भ होता है, आध्यात्मिक जीवन का आरम्भ होता है और अन्त में हम पावन और पूर्ण बन जाते हैं। यह स्फूरक शक्ति, जो बाहर से आती है, हमें पुस्तकों से प्राप्त नहीं हो सकती, **एक आत्मा दूसरी आत्मा से ही प्रेरणा प्राप्त कर सकती है, किसी अन्य वस्तु से नहीं।** हम जन्म भर पुस्तकों का अध्ययन करते रहें और बड़े बौद्धिक भी हो जायँ, पर अन्त में हम देखेंगे कि हमारी आत्मा की कुछ भी उन्नति नहीं हुई है।

यह आवश्यक नहीं है कि उच्च श्रेणी के बौद्धिक विकास के साथ मनुष्य का आत्मिक विकास भी सम तुल्य हो जाय। प्रत्युत हम प्रायः यही देखते हैं कि बुद्धि का विकास आत्मा की ही वेदी पर होता है।

बुद्धि की उन्नति करने में तो हमें पुस्तकों से बहुत सहायता प्राप्त होती है, पर आत्मा के विकास में उनसे लगभग शून्य के बराबर ही सहायता प्राप्त होती है। ग्रन्थों का अध्ययन करते करते कभी कभी हम भ्रमवश ऐसा सोचने लगते हैं कि हमारी आध्यात्मिक उन्नति में इस अध्ययन से सहायता मिल रही है। पर जब हम अपना आत्म-विश्लेषण करते हैं, तब पता लगता है कि **ग्रन्थों से केवल हमारी बुद्धि को ही सहायता मिली है, आत्मा को नहीं।** यही कारण है कि हर व्यक्ति आध्यात्मिक विषयों पर अद्भुत व्याख्यान तो दे सकता है, पर जब करने का अवसर आता है तो वह अपने को बिल्कुल निकम्मा पाता है।

कारण यह है कि जो बाह्य शक्ति हमें आत्मोन्नति के पथ में आगे बढ़ाती है, वह हमें पुस्तकों द्वारा नहीं मिल सकती। आत्मा को स्फुरित करने के लिए ऐसी शक्ति, किसी दूसरी आत्मा से ही प्राप्त होनी चाहिए।

जिस आत्मा से यह शक्ति मिलती है, उसे **'गुरु'** या **'आचार्य'** कहते हैं और जिस आत्मा को यह शक्ति प्रदान की जाती है, वह **'शिष्य'** या **'चेला'** कहलाता है। ''**इस शक्ति के संप्रेषण** के लिए पहले तो यह आवश्यक है कि जिस आत्मा से यह शक्ति संचारित होती है, उसमें उस

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर...

# समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

( 24 नवम्बर 1926 )

का 94 वाँ

# अवतरण दिवस

## रविवार, 24 नवम्बर 2019 को सुबह 10.30 बजे जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा।

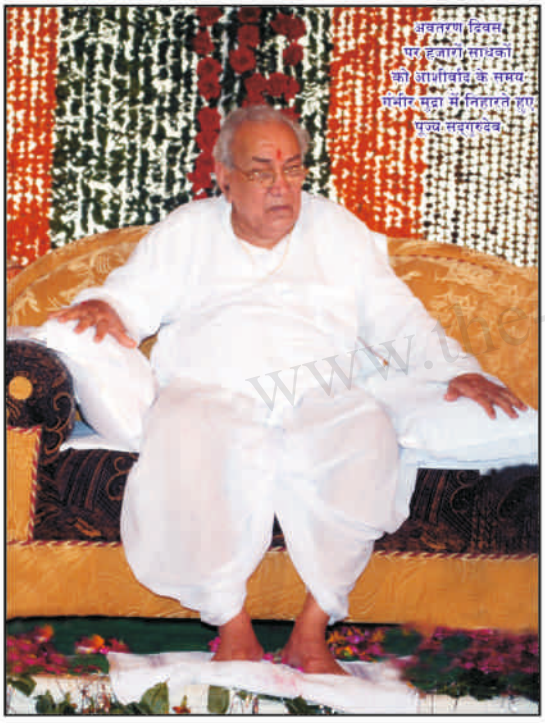


''24 नवम्बर 1926 को भौतिक में श्री कृष्ण का अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक ज्योति नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का मतलब है-अधिमानसिक देव का अवतरण जो अपने-आप तो वास्तव में अतिमानसिक नहीं है पर **अतिमन** और **आनंद** के अवतरण के लिये तैयारी कर रहे हैं।

**कृष्ण आनंदमय है,** वे आनंद की ओर अभिमुख विकास को अधिमानस के द्वारा सहारा देते हैं।''

-महर्षि श्री अरविन्द घोष द्वारा
8 अक्टूबर 1935 को घोषणा
संदर्भ-श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित
'लाल कमल' पुस्तक पृष्ठ-154 पर

## इस पावन वेला पर समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

**मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर ( राज. )-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
**Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org**

# देव मुहूर्त अतिमानस-सूर्य का उदय

''ऐसी घड़ियाँ आती हैं, जब देव मनुष्यों के बीच विचरण करते हैं और हमारे जीवन-सलिल पर भगवान् का श्वास फैल जाता है; ऐसा भी समय आता है, जब वे पीछे हट जाते हैं और मनुष्य अपने **अहंकार की सामर्थ्य या निर्बलता से काम करने के लिये छोड़ दिया जाता है।** प्रथम काल में थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर बड़े परिणाम पैदा होते हैं और भाग्य बदल जाता है; दूसरे काल में जरा से परिणाम के लिये बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। यह सच है कि दूसरा पहले के लिये तैयारी कर सकता है, यज्ञ का थोड़ा-सा धुँआ बनकर स्वर्ग में जा सकता है और वहाँ से भगवान् की देन का आह्वान कर सकता है।

अभागा है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत मुहूर्त के आने पर सोया हुआ रहे या उसके उपयोग के लिये तैयार न हो, क्योंकि उसके स्वागत के लिये दीया संजोकर नहीं रखा गया है और उसकी पुकार की ओर से कान बंद कर लिये गये हैं। पर कहीं अधिक अभागे हैं, वे जो सशक्त और तैयार होते हुए भी उस शक्ति का अपव्यय करते हैं और उस मुहूर्त का दुरुपयोग करते हैं; उनके भाग्य में होती है पूरी न हो सकनेवाली क्षति या एक महान् विनाश।

**भागवत मुहूर्त में धो डालो अपनी अंतरात्मा से अपने-आपको धोखा देने की वृत्ति, ढोंगबाजी और झूठी आत्म-प्रशंसा ताकि तुम सीधे अंतःपुरुष को देख सको और उसकी पुकार को सुन सको।** तुम्हारी प्रकृति का कपट, जो पहले तुम्हें प्रभु की दृष्टि से तथा आदर्श की ज्योति से बचाये हुए था, अब तुम्हारे कवच में एक छेद बन जाता है और ऊपर से प्रहारों को निमंत्रण देता है। यदि क्षण भर के लिये तुम जीत भी गये तो वह तुम्हारे विजय के समय भी तुम्हें पटक देगा।शुद्ध होकर झाड़ फेंको समस्त भय को; क्योंकि यह घड़ी प्रायः भयंकर होती है, यह आग, बवण्डर और तूफान की न्याई है और है रुद्र का ताण्डव नृत्य; परंतु **जो इसमें अपने उद्देश्य की सच्चाई के बल पर खड़ा रह सकता है, वही खड़ा रहेगा;** चाहे वह वायु के पंखों पर उड़ भी क्यों न जाये, फिर भी वह जरूर वापिस आ जायेगा। सांसारिक बुद्धिमता को तुम अपने साथ अधिक कानाफूसी न करने दो, क्योंकि यह अप्रत्याशित की, गणनातीत की, अपरिमेय की घड़ी है। भागवत 'श्वास' की शक्ति को अपने तुच्छ यंत्रों से न मापो, लेकिन विश्वास रखो और आगे बढ़ते चलो।

लेकिन सबसे बढ़कर, चाहे क्षण-भर के लिये ही क्यों न हो, अंतरात्मा को '**अहं**' के कोलाहल से मुक्त रखो। तब रात को अग्नि तुम्हारे आगे चलेगी और तूफान तुम्हारा सहायक होगा और तुम्हारी **ध्वजा** जिस महानता को जीतना है, उसके सबसे ऊँचे शिखर पर **फहरायेगी।**''

**संदर्भ-श्री अरविन्द की 'लाल कमल' पुस्तक से**

# ईश्वरीय इच्छा का मूर्तरूप

**''मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि मैं इस भव सागर के आखिरी किनारे पहुँच चुका हूँ।''** उस दयालु सर्व शक्तिमान ने झुक कर मेरा दाहिना हाथ अपने दाहिने हाथ में मजबूती से थाम लिया है। ऐसी स्थिति में थोड़ा सा प्रयास करने पर ही, मैं इस भव सागर से बाहर निकल जाऊँगा। मुझे स्पष्ट समझा दिया गया है कि इसके लिए मेरा प्रयास नितान्त आवश्यक है, उसके बिना कार्य पूरा होना सम्भव नहीं है। **कुछ इसी प्रकार के दिशा-निर्देशों और आदेशों के सहारे अकेला ही चल पड़ा हूँ।**

**-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग**

गुरुदेव ने परिस्थितियों वश आराधना शुरू की। 1 जनवरी 1969 को गायत्री ( निर्गुण निराकार ) व 1984 में श्री कृष्ण ( सगुण साकार ) की सिद्धि हो गई। इन दोनों सिद्धियाँ होने के कारण से, गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान लगता है। गुरुदेव ने कहा कि मुझे मत्स्येन्द्र नाथ जी का आदेश था कि **'जन्म भूमि में कोई कदर नहीं होती है, इसलिए सूर्यनगरी जोधपुर में आ गया। ये वास्तव में ही सूर्यनगरी है। मेरा यह मिशन पूरी दुनिया में यहीं से फैलेगा।'**

**पूरी दुनिया को सिद्धयोग दर्शन से लाभान्वित करने तथा** वैदिक ( सनातन ) धर्म को विश्व धर्म बनाने के उद्देश्य से 10 मई 1993 को गुरुदेव ने **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर** की स्थापना की और 25 दिसम्बर 1997 को अपनी संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org) का अपने कर कमलों से शुभारम्भ किया। इस वेबसाइट पर सिद्धयोग दर्शन की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

गुरुदेव ने अपने जीवनकाल के 92 साल में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए, संस्था द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रमों से लाखों लोगों को सिद्धयोग दर्शन में वर्णित शक्तिपात दीक्षा दी। लाखों लोगों ने अब तक संजीवनी मंत्र जाप के साथ ध्यान करके अपने जीवन को धन्य बनाया है।

इस दर्शन को फैलाने के उद्देश्य से हर साधक ने अपने-अपने स्तर पर मानवीय प्रयास किये हैं और उसका यह प्रयास भी तभी तक सफल हुआ है, जब तक उसने अपने आपको एक निमित्त मात्र ही समझा।

गुरुदेव ने कहा है कि यह दर्शन विश्व दर्शन होगा, यह ईश्वरीय इच्छा है। गुरुदेव से जब कोई साधक पूछता कि यह दर्शन पूरी दुनिया में कैसे फैलेगा तो गुरुदेव कहते कि अभी हम बहुत ही एडवांस चल रहे हैं, जो हो रहा है-उसको दृष्टा भाव से देखो और देखते जाओ !

कैसे मानवीय प्रयास असफल हो जाते हैं और ईश्वरीय इच्छा का प्रत्यक्षीकरण होने लगता है, इसका उदाहरण अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के माध्यम से दुनिया के सामने हैं-

24 नवम्बर 2018 को समर्थ सद्गुरुदेव के अवतरण दिवस पर संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org) का तकनीकी रूप से नवीनीकरण किया गया। उस दिन से आज दिनांक 27 सितम्बर 2019 तक भारत सहित 118 देशों में 4 लाख 51 हजार से अधिक बार यह वेबसाइट देखी जा चुकी है।

संस्था ने 19 अगस्त 2019 से उन लोगों का विवरण रखना शुरू किया है, जिन लोगों ने सोशल मीडिया द्वारा प्रथम बार गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन के बारे में सुना और संस्था से संपर्क किया।

19.8.2019 से 27.9.2019 तक कुल 242 लोगों ने, जो गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, संस्था से संपर्क किया। जिसमें से 80 प्रतिशत से ज्यादा लोगों ने संस्था के You tube channel-Gurudev Siyag's Siddha Yoga-GSSY पर गुरुदेव के प्रवचनों को सुनकर संस्था से संपर्क किया।

गुरुदेव के इस मिशन का प्रचार-प्रसार किसी भी व्यक्ति विशेष को आगे रखकर नहीं हो सकता है। इस मिशन में सद्गुरुदेव ही सर्वोपरि हैं।

जो व्यक्ति इस मिशन का काम करना चाहते हैं, उनको एक पोस्टमैन की भूमिका ही निभानी होगी।

सबसे अनुरोध है कि गुरुदेव द्वारा स्थापित मिशन का प्रचार-प्रसार करने में अपना सहयोग दें और गुरुदेव द्वारा स्थापित संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org) और यू-ट्यूब चैनल का प्रचार-प्रसार करें।

❖❖❖

# सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूंगा।"

जिस प्रकार हिन्दू धर्म अग्नि-प्रलय की बात कहता है, बाइबल भी उसी भाषा में बोलते हुए कहती है - 2 पीटर 3:5 से 7 "वे तो जान बूझकर यह भूल गये, कि परमेश्वर वचन के द्वारा से आकाश प्राचीन काल से वर्तमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत् जल में डूब कर नाश हो गया (जल प्रलय)। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी शब्द (ॐ) के द्वारा इसलिये रखे हैं कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।"

हिन्दु मत के अनुसार दशवें अवतार के अवतरण के बाद युग बदल जावेगा अर्थात् पुनः चतुष्पाद युग (सत्य युग) प्रारम्भ हो जावेगा। बाइबल भी इस सम्बन्ध में कहती है - "2 पीटर 3:13 पर उस (ईश्वर) की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आशा रखते हैं जिन में धार्मिकता बास करेगी।" इस सम्बन्ध में मलाकी 4:1 से 2 में कहा है - "क्यों कि देखो, वह धधकते भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जाएंगे, और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों से तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकल कर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदोगे और फांदोगे।" यशायाह 65:17 "क्यों कि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ, और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच-विचार में भी नहीं आएंगी।" 65:19 व 20 - "मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित होऊंगा; उसमें फिर रोने व चिल्लाने का शब्द नहीं सुनाई देगा। उसमें फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बुड्ढा जाता रहेगा, जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरनेवाला है, वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा।"

उपरोक्त से प्रमाणित होता है कि 21वीं सदी से नया युग प्रारम्भ होगा और उसमें मात्र सनातन-धर्म ही विश्व धर्म होगा।

# गुरुदेव सियाग सिद्धयोग

## संस्था की वेबसाइट (www.the-comforter.org), यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddhayoga - GSSY), फेसबुक (Avsk Jodhpur, Gurudev Siyag Siddhayoga Avsk ) व अन्य सोशल मीडिया से जानकारी प्राप्त कर जोधपुर मुख्यालय में वाट्सअप व फोन पर हुई बातचीत के कुछ अंश-

**-मधुबनी ( बिहार ):- 6.9.2019**
**श्री अमरेन्द्र कुमार लाल, उम्र-62 वर्ष**

**किडनी की पथरी का निकलना और पेरेलाइसिस का ठीक होना। सीटी स्केन और अल्ट्रा साऊण्ड रिपोर्ट भी नेगेटिव आई।**

फोन पर बातचीत हुई। बिहार के राजस्व विभाग से सेवानिवृत्त 62 वर्षीय श्री लाल जी ने बताया कि मुझ पर गुरुदेव की बड़ी कृपा हुई है। पिछले तीन-चार साल से मुझे पेरेलाइसिस ( लकवा ) हो गया और उसके बाद किडनी की पथरी से परेशान था। डॉक्टरों से खूब इलाज करवाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैं बहुत दुःखी हो गया था। एक दिन **यू-ट्यूब** पर गुरुदेव का वीडियो देखा और मैं बिना फोटो से ही पिछले छह महिने से मंत्र जप के साथ ध्यान कर रहा हूँ। मैं पूरी तरह से स्वस्थ हो चुका हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

उन्होंने अपने भोलेपन स्वभाव से पूछा कि अब मुझे गुरु महाराज से दीक्षा लेने के लिए क्या करना पड़ेगा ? मेरे पास गुरुदेव का फोटो भी नहीं है। आप मेरी मदद करिये। तब उनको बताया कि आपने गुरुदेव की आवाज में जो संजीवनी मंत्र सुना है, वही दीक्षा है और आप अपने घर बैठे ही मंत्र जप और ध्यान करते रहिये।

जब उनको पूछा गया कि आपने अन्य लोगों को भी गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताया ? तो उन्होंने कहा कि मैं बहुत से बीमार लोगों को बता चुका हूँ और मैं लोगों से कहता भी हूँ कि मुझे गुरुदेव का ध्यान करने से बहुत फल मिला है। अब आप गुरुदेव की फोटो भेजो, मैं हॉस्पीटल में जाकर भी प्रचार करूँगा।

उन्होंने बातचीत के दौरान कई बार इस बात का जिक्र किया कि हमारे पास गुरुदेव का फोटो नहीं है लेकिन बिना फोटो के भी हमको बहुत लाभ हुआ है।

संस्था से इनको स्पिरिचुअल साइंस मासिक पत्रिका और अन्य प्रचार सामग्री पोस्ट द्वारा भेजी गई है।

**-बैंगलोर ( कर्नाटक )-19.9.2019**
**श्रीमती अनिता बैन पटेल**

**संजीवनी मंत्र के जप व नियमित ध्यान द्वारा बदन दर्द से मुक्ति**

**एक अद्भुत घटना घटी**

**एक दिन, मैं मेरे गुरुदेव का ध्यान कर रही थी तो अचानक क्या हुआ कि मेरे आज्ञाचक्र पर गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का चित्र दिखा।**

मेरा नाम अनिता बैन पटेल है। मैं मूलतः गुजरात की रहने वाली हूँ, पर वर्तमान में, मैं बैंगलोर में रहती हूँ। पहले से मेरे एक गुरु है-जो उगम योग चलाते थे, से जुड़ी हुई हूँ। वह सौराष्ट्र के थे। अब वह ब्रह्मलीन हो चुके हैं। एक दिन मैं मेरे गुरुदेव का ध्यान कर रही थी तो अचानक क्या हुआ कि मेरे आज्ञाचक्र पर गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का चित्र दिखा। मैं आश्चर्य चकित रह गई। मैंने सोचा कि यह फोटो किसका है ? मैंने कभी भी किसी भी माध्यम से ये फोटो देखी नहीं थी। जब मैं लगभग तेरह वर्ष की थी तब मेरे दादाजी ने आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में बताना शुरू किया था तो मैंने सोचा कि मेरे दादा जी मुझे दिखे होंगे लेकिन उनका रूप बदला कैसे ? मुझे जानने की इच्छा हुई।

मेरे मन में एक चिंतन शुरू हो गया कि आखिर ये तस्वीर किसकी थी ? मुझे मेरे गुरुदेव के ध्यान में यह तस्वीर क्यों दिखाई दी ? मेरे गुरुदेव तो ब्रह्मलीन हो चुके हैं तो अब मेरा समाधान भी करने वाला कोई नहीं था। गुरुवार के दिन क्योकि मैं यू-ट्यूब पर सत्संग सुनती रहती हूँ, जैसे ही मैंने यू-ट्यूब खोला तो **गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का वीडियो मेरे सामने आ गया।** मैं क्या देखती हूँ कि

वही फोटो उस वीडियो में दिखी, जो मैंने उस समय ध्यान करते समय अपने आज्ञाचक्र पर देखी थी। मैं आश्चर्य चकित रह गई। मेरा शरीर पसीना पसीना हो गया। फिर मैंने गुरुदेव के कई वीडियो देखे और ध्यान करने लगी तो मेरे आज्ञाचक्र पर खिंचाव होने लगा। करीब 20-21 दिन से लगातार सुबह शाम संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान कर रही हूँ। मुझे मेरे गुरुदेव से भी आंतरिक प्रेरणा यही मिली कि अब इन्हीं गुरुजी का ध्यान कर। मुझे तब आश्चर्य हुआ कि मेरा दो दिन बाद ही लम्बे समय से हो रहा असहनीय दर्द गायब हो गया और आज मैं स्वस्थ हूँ।

परन्तु मैं गुरुदेव के वीडियो देखती रहती हूँ। कई लोगो के वीडियो देखे जो गुरुदेव के बारे में अलग अलग तरीके से बताते रहते हैं तो आश्रम से जबाब दिया कि हाँ बुहत सारे लोग हैं। जो अपनी तरफ से कुछ न कुछ यू-ट्यूब पर डालते रहते हैं। आप सस्था का ऑफिसियल यू-ट्यूब चैनल (Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY) है, उस पर गुरुदेव के प्रवचन सुन सकती हो।

उसने कहा **''मेरी समझ में नहीं आता, जब गुरुदेव की वाणी में प्रवचन है तो फिर ये लोग अपनी-अपनी क्यों सुनाते रहते हैं? गुरुदेव की वाणी में सुनाना चाहिए ना यह कैसे लोग हैं? जो गुरु से ज्यादा अपने आप को महत्त्व देते हैं। और लोगो को भ्रमित करते रहते हैं। मुझे भी समझ में नहीं आया कि क्या सही है और क्या गलत है।?**

ध्यान में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की तस्वीर दिखने वाली घटना, और मेरे जीवन में इस आराधना से जो परिवर्तन आया है, इसकी खुशखबरी मैंने मेरे परिवार के आसपास के रिश्तेदारों व हमारी एक 80 लोगों की सत्संग मण्डली है, उन सबको दी और उन लोगों ने भी आश्चर्य व्यक्त किया।

जिस महिला ने समर्थ सद्गुरुदेव के विषय में कभी भी सुना या देखा नहीं, और वह अपने गुरुदेव जो सौराष्ट्र के थे, जो अभी भौतिक दुनिया में नहीं है, उनका ध्यान कर रही थी और उनके **ध्यान में समर्थ सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर का, टी. वी. स्क्रीन पर जैसे चित्र आते हैं, वैसे आ जाना कितनी बड़ी घटना है।** सद्गुरुदेव ने बहुत पहले कहा था कि एक दिन ऐसा आएगा कि लोग शाम को सोकर सुबह उठेंगे तो दुनिया चकाचौंध रह जायेगी कि यह क्या हो गया? और ऐसा होकर रहेगा। यदि वह परमसत्ता एक महिला के ध्यान में अपनी तस्वीर दिखा सकती है तो उसके लिये लाखों करोड़ों लोगों को एक साथ दिखाई दे जाना कोई असंभव नहीं है। पिछले अंक में एक ऐसी ही घटना **कनाडा** की लिखी गई थी कि उस महिला के मन में अचानक विचार कौंधा कि मुझे नेट पर **'सिद्धयोग'** की जानकारी लेनी चाहिए और ज्यों हि सर्च किया तो सद्गुरुदेव सियाग का वीडियो सामने आ गया।

**-मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) 21.09.2019**
**श्री मनोज कुमार, उम्र-47 वर्ष**
**20 वर्ष बाद मंजिल मिल गई**
**अद्भुत, अकल्पनीय व अलौकिक**

**हेलो !**
**नमस्कार जी !**
सर ये यू-ट्यूब से हमने आपके मोबाइल नं 9784742595 लेकर कॉल किया है।
ए वी एस के ऑफिस- आप कहां से बोल रहे हैं?
श्री मनोज -मुजफरनगर (उ.प्र.)
ए वी एस के ऑफिस-जी बताइये !
श्री मनोज -मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) -देखो ! धार्मिक रूप से मेरी काफी समय से रूचि है। बहुत गुरु देख्या, बहुत गुरु सुन्या, बहुत गुरु समझा लेकिन मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया। लेकिन गुरुदेव के मिलने से मुझे बहुत खुशी हुई। अभी मुझे 4 या 5 दिन ही हुए हैं। गुरुदेव का वीडियो देख्या, चार-चार घण्टे तक लगातार वीडियो देख्या। जो मेरी समझ में आया, जो मुझे लग्या कि मुझे मेरी मंजिल मिल गई। मैं समझ गया कि ये ही मेरी मंजिल है, ये ही मेरी मंजिल है। वीडियो देखते ही सैकण्डों में मुझे लगा कि ये वो ही है। अब मैं इतना आनंदमय हूँ कि मेरे पास इस खुशी **को ज़ाहिर करने का कोई शब्द नहीं है और ना ही भगवान् ने इस धरती पर ऐसा शब्दकोष बनाया जिससे कि दूसरे व्यक्ति को समझाया जा सके। बस गूँगे का गुड़ है, जिसने खाया उसी को मालूम होता है।**

अच्छा, दीक्षा के विषय में मुझे जानकारी चाहिए थी। जो वीडियो में है उसे ही दीक्षा मान ली जायें या और कुछ करना पड़ेगा?

उनको समझाया गया कि गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनना ही दीक्षा है। बस सुनकर सघन जप और ध्यान करना है।

मैंने अभी ध्यान शुरू नहीं किया है लेकिन मुझे पक्का विश्वास हो गया कि मुझे वो मिल गया। बहुत सारे धार्मिक ग्रंथ पढे हैं, कई प्रकार के मंत्रों का जप किया है, गंगा किनारे कई कई दिन बिताए हैं, कई यात्राएँ भी की हैं, 15 साल पहले हरिद्वार में बाबा रामदेव जी से भी मिला और कुछ क्रियाएँ सीखी। लेकिन आत्मिक शांति नहीं मिली। बस आज ज्ञान बिक रहा है। लेकिन कहीं से भी कुण्डलिनी जागरण या योग विषय का कोई प्रत्यक्षीकरण नहीं हुआ। और गुरुदेव की आराधना में सब कुछ सरल और सहज है। कोई किसी भी प्रकार का आडम्बर नहीं, बंधन नहीं, बस एक नाम के सहारे ही सब कुछ पाया जाता है।

अभी गुरुदेव के वीडियो देखने से लगभग 15-20 दिन पहले, मैं बुरी तरह से टूट चुका था। मैं बुरी तरह से तड़प रहा था कि आखिर इतना सनातन ज्ञान, भारत में लुप्तप्राय: क्यों हो गया? अब मैं करूँ तो करूँ क्या? कुछ भी सूझ नहीं रहा था। कई विचार उठते थे कि जीवन प्रतिपल मौत की तरफ जा रहा है, कुछ भी घटना हुई और जीवन गया तो मैं ईश्वर की प्राप्ति कब करूँगा? और ऐसे विचारों के तूफान से मैं पागल सा होता जा रहा था, बस डूबने ही वाला था और भगवान् ने मेरी अंगुली पकड़कर महासागर के किनारे ला खड़ा किया।

अब मेरे जीवन का उद्देश्य है-गुरुदेव की आराधना के साथ इस दर्शन का, एक पोस्टमैन बनकर प्रचार-प्रसार करना।

**-हरियाणा-30.8.2019**

मैं हरियाणा से बोल रही हूँ। मैंने यू-ट्यूब पर गुरुदेव का कार्यक्रम देखा। मेरे को पहले दिन से ही जब मैंने ध्यान किया तो मेरा शरीर एकदम हल्का हो गया और अन्दर से शांति महसूस हुई व सिर के ऊपर दबाब महसूस हुआ। मेरे को बहुत अच्छा लगा

**रूस-8/9/2019**

**-Russian Ceparn:**

Jai!

I'm in **St.Petersburg Russia**.

I have watched video with mantra and meditated as required in the morning. Nothing happened during the meditation.

I do some sadhana myself and I'm wholeheartedly open to the Guru.

Now I chant during the day. Could you please help with kundalini?

**9/9/2019 Avsk Office Jodhpur:**

Jai Gurudev!

As you have mentioned that you have watched Gurudev's video so you have heard the Sanjeevani mantra in Gurudev's divine voice.

After listening to the mantra you are suppose to meditate for 15 minutes while chanting the mantra mentally without moving the lips and tongue and focussing on Gurudev's image at third eye spot.

The above process is Shaktipat initiation where the disciple is initiated into Siddha Yoga through the mantra.

Once you have meditated in the above manner the Kundalini gets awakened itself. Since Kundalini is the divine energy she starts cleansing the practitioner's body if he has any type of physical or mental illness by inducing the yogic kriyas. Yogic Kriyas are spontaneous involuntary body movements which can be in the form of Asan, paranayam, mudra or sensations etc.

If you haven't experienced any yogic movements so far that doesn't mean that Kundalini isn't awakened.

It's the universal divine force which knows the exact requirement of each individual.

www.the-comforter.org

Continue the practice of meditating daily morning and evening for 15 minutes preferrably on an empty stomach as well as mentally the chant the mantra without moving your lips and tongue as much as possible.Chanting is the key to profound meditation.

You will notice the subtle changes within you gradually. It could be in your tendencies or the type of food preference or the calmness within or how you respond to things etc.

For any further queries please feel free to contact us Plz visit Website :www.the-comforter.org

**9/9/2019 Russian Ceparn**:

Can I do 45min mindfullness (concentrating on breath) meditation instead? Ok, I see mantra is essential.

**9/9/2019] Avsk Office Jodhpur:**

Please follow Gurudev Siyag's Siddha Yoga in totality - meditation and chanting both.

Mantra is the key. It has to be chanted mentally while doing your daily activities. Gurudev used to say chant it round the clock.

Please do not chant any other mantra or follow any other spiritual practice when you are practicing Siddha Yoga.

**10/9/2019-Russian Ceparn:**

Has he left the world already?

Will he be able to control my kundalini rising then?

**10/9/2019-Avsk Office Jodhpur:**

He is controlling each of his disciples Kundalini and their spiritual growth. Gurudev has left his physical body. An enlightened and empowered spiritual master like Gurudev is not limited by HIS physical body. He is omnipresent, omniscience and omnipotent.

With full faith in Gurudev follow the practice sincerely to realize the benefits

**नेपाल-श्री भैरब राजबंशी**

**उम्र-26 वर्ष, 12.9.2019**

ये मूलतः नेपाल के रहने वाले हैं लेकिन पिछले तीन वर्षों से मलेशिया में नौकरी करते हैं। इन्होंने बताया कि छह महिने पहले शादी हुई है। लेकिन कुछ रति रोग की वजह से बहुत परेशान हो गया। डॉक्टर को बताया तो बोला कि छह महिने तक लगातार दवाईयाँ खानी पड़ेगी, तब आप 75 प्रतिशत ठीक हो पाओगे।

फिर वह बहुत चिंता में पड़ गया कि अब जीवन में कब ठीक हो पाएगा। फिर नेट पर सर्च करते हुए फेसबुक और यू-ट्युब के माध्यम से गुरुदेव के बारे में जानकारी मिली। संस्था में फोनकर सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी प्राप्त कर, संजीवनी मंत्र का जप और ध्यान शुरू किया है।

उन्होंने बताया कि कुछ परेशानी आ रही है, आराधना करने में, लेकिन मुझे विश्वास है कि अब मैं ठीक हो जाऊँगा।

**Bangladesh**--Hello sir

I am from Bangladesh, I am Muslim, can I practice your meditation? is it worked for me if I just follow your instructions by online? or it is mandatory to meet with you gurudev Ji.thanks

**12/9/2019 Avsk Office Jodhpur:** Anyone belonging to any religion can practice this meditation and chanting.

You don't have to meet anyone.

The only thing that you have to do is to first hear the Mantra in Gurudev's divine voice. This is followed by regular practice of meditation morning and evening on an empty stomach and chanting of the Sanjeevani

www.the-comforter.org

Mantra mentally without moving the lips and tongue as much as possible while performing your daily activities.

The mantra has to be chanted mentally while doing the meditation also.

Yes, you can follow the online instructions for method of meditation.

Please feel free to contact us for any further queries

**1 2 / 9 / 2 0 1 9 Bangladesh**-

Thank you so much

: God bless you

**Pakistan - 11/9/2019**

Respected sir

I'm Arshad Bhati from Lahore, Pakistan. I want to learn meditation. Can you help me learn it ?

Respected sir how can I learn meditation while I'm in Pakistan and I can't come to India because of visa problems

I love Nath tradition. But I can't understand Hindi

**11/9/2019 Avsk Office Jodhpur**: Gurudev Siyag's Siddha Yoga is a very easy to do spiritual practice. A seeker needs to do 2 things only- chant the Sanjeevani Mantra as much as possible while performing your daily activities and meditate daily morning and evening preferrably on an empty stomach.

For this you need to first hear the Mantra in Gurudev's divine voice. After that sit comfortably facing any direction. Look at Gurudev's image for a while and then pray to him to help you meditate for 15 minutes.

After this close your eyes and imagine Gurudev's image in the centre of your forehead ( Third eye spot) and continue to chant the Sanjeevani Mantra mentally without moving the lips and tongue.

During this period if you undergo any type of automatic yogic movements then let them happen.

It will stop once the requested 15 minutes is over.

These Yogic movements occur as per the seeker's body requirement so are different for different people. It helps to cleanse your body physically, mentally and spiritually.

It is very important that mental chanting of the Sanjeevani Mantra is done as much as possible while performing your daily activities for profound meditation. Chanting is the key.

For any further queries please feel free to contact us.

**12/9/2019] Pakistan:**

Bundle of thanks respected sir

I'll follow all your instructions

Respected sir I have started the practice of this meditation according to your advice.

I also want to tell you that I suffer from Anxiety and low self-confidence.

I'm 45 years old. I work as a school teacher.

I read that founder of this meditation Ram Lal Siyag has died. Can you tell me the name of the present head of your institution.

**14/9/2019 Avsk Office Jodhpur:**

Gurudev Shri Ramlalji Siyag attained Gayatri Siddhi and Krishna Siddhi in his life time. He has the power to awaken the Kundalini of the seeker sitting anywhere in the world. The seeker has to look at his picture and hear the Sanjeevani Mantra in his voice to get initiated into

www.the-comforter.org

Siddha Yoga. Gurudev is omnipresent, omniscience and omnipotent. He is still the Head of our institution.

Gurudev controls the Kundalini shakti in every disciple. Please continue the spiritual practice of Siddha Yoga as told by Gurudev. Chant the Sanjeevani Mantra mentally without moving the lips and tongue as much as possible while performing your daily activities. You will experience the changes from within.

Have faith in Gurudev. For any further queries please feel free to contact us.

**नोएडा ( उ.प्र )**

**17.9.2019**

**श्री महीन्द्र सिंह शाह**

क्षणिक दृष्टि दर्शन से मेरा जीवन बदल गया।

फोन पर हुई बात में श्री शाह ने बताया कि मैं पिछले 15 दिनों से लगातार सुबह शाम सघन मंत्र जप के साथ 15-15 मिनट नियमित ध्यान कर रहा हूँ। मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। उनको पूछा गया कि आपने सद्‌गुरुदेव सियाग की जानकारी कहाँ से प्राप्त की ? तो उन्होंने जो बताया वो बड़ा ही अद्‌भुत और आश्चर्यचकित करने वाली बात थी। कहा कि आज से साल या सवा साल पहले वह ऋषिकेश घूमने गया था, तब मैं इनकी प्रदर्शनी के आगे से गुजरा था। वहाँ पर सिद्धयोग के पेपर बाँट रहे थे लेकिन मुझे देने पर भी मैं बिना लिये जल्दी से आगे निकल गया था। मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। समय गुज़र गया और मेरा कोई लेना देना भी नहीं रहा। मुझे ऐसे कार्यों में कोई रूचि भी नहीं थी। पिछले 5-6 महिने से कुछ शारीरिक समस्या हो गई। डॉक्टर से मेडिसिन भी ली लेकिन कोई राहत नहीं मिल रही थी। मैं बड़ा परेशान हो गया।

एक दिन वैसे ही नेट पर यू-ट्यूब के वीडियो देख रहा था कि अचानक श्री सियाग का वीडियो सामने आ गया तो मुझे सवा साल पहले ऋषिकेश वाली घटना तुरंत याद आ गई कि इन महाराज जी का कार्यक्रम तो मैंने ऋषिकेश में देखा था। फिर मैंने पूरा वीडियो देखा और उसमें बताई गई विधि के अनुसार मंत्र जप और ध्यान शुरू कर दिया। मेरे जीवन में तीव्र गति से बदलाव आया और मुझे बहुत राहत मिल गई जैसा कि उन्होंने बताया।

ऋषिकेश में जब प्रदर्शनी के आगे से निकला तो मैं यह सब देखना तक पसंद नहीं कर रहा था लेकिन ईश्वर ने मुझ पर असीम कृपा कर दी। अब मैं सद्‌गुरुदेव सियाग के पावन चरण कमलों में कोटि कोटि नमन करता हूँ।

उन्होंने अपनी इच्छा ज़ाहिर की है कि अब वे अपने क्षेत्र में प्रचार प्रसार करना चाहते हैं। फिर आश्रम से प्रचार सामग्री भेजी गई।

**दिल्ली-**

**श्री मनीष थपलीयाल**

उम्र-43 वर्ष मूल रूप से उत्तराखण्ड राज्य के टिहरी गढवाल के निवासी है। उनको अध्यात्म ज्ञान की पिपासा थी। उन्होंने बताया कि उनको फेसबुक से सद्‌गुरुदेव सियाग जी की जानकारी प्राप्त हुई। फिर यू-ट्यूब पर मंत्र वीडियो सुनकर ध्यान लगाना शुरू किया। मेरा जीवन ही बदल गया तथा मुझे इतना अद्‌भुत आनंद आता है कि मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता हूँ।

मुझे तो अमूल्य हीरा मिल गया। अब मैं और लोगों को भी बताता रहता हूँ। मैंने इस अमर ज्ञान की चर्चा, मेरे एक मित्र से की तो उसने इसको टाल दिया। लेकिन मैंने कई बार जिक्र किया तो उसने एक दिन समय निकाल कर दस मिनट के लिए ध्यान करने बैठा और करीब ढाई घण्टे बाद उठा। फिर तो वह मेरे से भी कहीं ज्यादा समर्पित हो गया, इस ज्ञान के प्रति। मैंने उनकी वेबसाइट में भी पढ़ा-प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? करके देखो ! और यह पूर्णतः सत्य है। मृत्यु लोक में पार्थिव अमरत्व के ज्ञान को सहज में लुटाने वाले ऐसे असीम आनंद दाता को बारंबार नमन् करता हूँ, वन्दन करता हूँ।

**मुम्बई-श्री सुधांशु पाटनी**

मेरे एक मित्र ने गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सिद्धयोग दर्शन के बारे में मुझे जानकारी दी और मुझे ध्यान करने को बोला था लेकिन मेरी किसी प्रकार के ध्यान आदि में रूचि नहीं थी तो मैंने टाल दिया। लेकिन जब भी वे मेरे से मिलते तो उनको जिस परमानंद की अनुभूति हो रही थी, उसका जिक्र कर ही देते थे। एक दिन मैंने मानस बना ही लिया और मैं दस मिनट के लिए ध्यान करने बैठ गया।

मुझे ताजुब हुआ जब मैं ध्यान से उठा तो करीब ढाई घंटे से भी ज्यादा समय हो चुका था। मुझे असीम आनंद की अनुभूति हुई। फिर मैं लगातार करने लगा तो मुझे प्राणायाम आदि शुरू हो

गये। विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ भी होने लगी। मैं तो इतना गद्गद हूँ कि **'अब कुछ कहा न जाय'**, ये वाली स्थिति है, जैसा कि उन्होंने बताया।

इनकी जिज्ञासा इतनी बढ़ गई कि ये शुरू-शुरू में तो दिन में कई बार जोधपुर आश्रम में फोन कर आराधना संबंधी जानकारी लेते थे।

**कई बार बातचीत के दौरान चिन्ता भी ज़ाहिर की कि काश ! वह भी गुरुदेव के साक्षात् दर्शन कर पाते।**

**इस बात को लेकर मेरा यह आग्रह है कि हम सब व्यर्थ में एक-दूसरे की आलोचना कर समय न गवाएं। हम अपने आत्म कल्याण के लिए एकाग्र होकर गुरुदेव के सानिध्य में पाये आशीर्वाद का लाभ उठाएं।**

### हैदराबाद (तेलंगाना) 26.8.2019

-श्री मदन मौर्य उम्र-57 वर्ष है और यू-ट्यूब पर धार्मिक वीडियो सर्च कर रहे थे। गुरुदेव सियाग जी का वीडियो देखा। पूरा सुना तो वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत प्रेरणा मिली। मेरी आध्यात्मिक जिज्ञासा बहुत थी लेकिन शांत करने वाला, आज तक कोई मिला ही नहीं। मैंने जीवन में 4 गुरु बनाए लेकिन आत्मिक शांति नहीं मिली। अब मुझे आस जगी है। मैंने दीक्षा मंत्र सुना है और उनका नियमित ध्यान और मंत्र जप कर रहा हूँ। इंटरनेट पर वीडियो देखा और आत्मा में शांति का एहसास हुआ, इसका मतलब कोई बहुत बड़ी आध्यात्मिक शक्ति है। अन्यथा तो किसी के साथ वर्षों गुजार दो कुछ भी नहीं होता है।

### रीवा (मध्यप्रदेश) :-10 मिनट तक मंत्र वीडियो सुना और अद्भुत शक्ति का एहसास हुआ-

20 वर्षीय युवा विद्यार्थी ने बताया कि वह **यू-ट्यूब** पर हमेशा ही कुछ न कुछ सर्च करता ही रहता था। कई तरह के वीडियो देखता रहता था। एक दिन गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का एक वीडियो देखा जिसका शीर्षक था-मंत्र द्वारा कुण्डलिनी जागरण। मैंने उसको मजाक में लेते हुए यह मन में सोचा कि मंत्र जप से कोई कुण्डलिनी जागरण थोड़ा ही होता है ! यह तो लोगों को मूर्ख बनाकर धन्धा करने का, एक अच्छा साधन है।

उसने ऐसा सोचकर दस मिनट तक बिना ध्यान किये ही जप कर लिया। उससे शरीर में इतनी शक्ति उत्पन्न हो गई कि अब सहन नहीं हो पा रही।

फिर लगातार 8-10 दिन तक जोधपुर आश्रम में दिन में तीन-चार बार फोन करके बताता कि मेरी यह शक्ति कम नहीं पड़ रही है। मैंने तो गलती से देखा था। अब यह मेरा पीछा नहीं छोड़ रही है। अब मैं इससे मुक्त होना चाहता हूँ। फिर वह 13 सितम्बर को जोधपुर आश्रम आया और रोने लगा कि मैं कुण्डलिनी के वेग को सहन नहीं कर पा रहा हूँ। अपने रिश्तेदार को साथ में लेकर आया था। फिर उनको सिद्धयोग दर्शन की पूरी जानकारी देकर, गुरुदेव का पूरा प्रवचन और मंत्र सुनाकर 15 मिनट ध्यान कराया गया।

दोनों का ही गहरा ध्यान लगा और मन शांत हो गया। उसने गुरुदेव के आसन के आगे करूण प्रार्थना की, फिर कहा कि मैं जब तक ठीक नहीं हो जाता हूँ, तब तक वापस नहीं जाऊँगा। ऐसा कहकर ध्यान कक्ष में सो गया और दो घण्टे बाद कहा कि अब मैं ठीक हूँ, अब अपने घर जा रहा हूँ। और अब अपने घर पर ही मंत्र जप और ध्यान करूँगा। फिर वहाँ से चले गए उसके बाद उनका कोई कॉल नहीं आया। तो इस प्रकार यह शक्ति तीव्र गति से कार्य करती है और कई बार चुनौती देने वाले की चुनौती स्वीकार कर लेती है तो फिर उनको झुकाकर ही छोड़ती है।

जिनको कई जन्मों तक ऐसा अद्भुत योग प्राप्त नहीं होता है, उस बालक को स्वत: ही, सहज में मिल गया, जिसकी उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी।

### बालाघाट (मध्यप्रदेश) :-श्री रविशंकर डेहरिया -23.9.2019

वर्ष 2016 में जब उज्जैन में कुम्भ मेला लगा था, तब अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की ओर से सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। उस समय पुलिस अधीक्षक श्री रवि शंकर डेहरिया, तीन बार प्रदर्शनी स्थल पर आये थे और संजीवनी मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान किया था। उन्होंने बताया कि करीब साल-डेढ साल तक ध्यान किया था। उनके यौगिक क्रियाएँ भी शुरू हो गई थी। लेकिन बाद में पता नहीं कब ध्यान छूट गया।

www.the-comforter.org

उसके बाद आज अचानक **यू-ट्यूब चैनल** पर सर्च कर रहा था तो गुरुदेव का वीडियो खुल गया। उनको बड़ी खुशी हुई। फिर उनके मन में वापस गुरुदेव का मंत्र जप और ध्यान करने की इच्छा हुई। फिर उन्होंने अपने मोबाइल में सर्च किया और उनके जोधपुर आश्रम के मोबाइल नंबर रक्षित थे और उन्होंने कॉल किया, आश्रम की गतिविधियों की जानकारी ली और कहा कि अब मैं वापस गुरुदेव का ध्यान शुरू करूँगा, इतने दिन भूल गया था।

**बैंकॉक ( थाईलैण्ड )-**
**21.9.2019**
**श्री दसवीर सिंह**
**नमस्ते जी !**

मैं गुरुदेव जी से दीक्षा लेना चाहता हूँ, मुझे क्या करना पडेगा ? इस आराधना में कोई बंधन है क्या ?

मैंने पहले से ही कई मंत्र ले रखे हैं तो मुझे क्या करना पड़ेगा ?

यदि आप वांछित परिणाम चाहते हैं तो फिर एक ही मंत्र का जप करना पड़ेगा, और जो करते हो करते जाइये। सघन मंत्र जप से जीवन में बदलाव आता है।

उनको बताया गया कि गुरुदेव की आवाज में मंत्र सुनना ही दीक्षा है। और इस आराधना में किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है।

उन्होंने कहा कि वर्षों पहले, मैंने सुना था कि गुरुदेव केवल गुरुवार को ही दीक्षा देते थे।

उनको बताया गया कि गुरुदेव ने 30 जुलाई 2009 को मंत्र खुला कर दिया, अब गुरुदेव की दिव्य आवाज में कोई भी, कभी भी मंत्र सुन सकता है।

वे मूलतः वाराणसी के रहने वाले हैं और अब कई वर्षों से बैंकॉक में रह रहे हैं।

अपनी इच्छा ज़ाहिर की कि मुझे एक बार गुरुदेव के आश्रम में आकर धोक देनी है।

मैं आश्रम से बराबर जुड़े रहना चाहता हूँ, मुझे क्या करना पड़ेगा।

तब उनको पूरी जानकारी दी गई।

**मलेशिया-22.9.2019**
**श्री हरीश डँगवाल-55 वर्ष**
**-जय गुरुदेव !**
**जानकारी पूछने पर उन्होंने बताया**

जी, आज से ही ध्यान शुरू किया है। यू-ट्यूब से जानकारी मिली है और मैं देहरादून से हूँ। फिलहाल मलेशिया में रहता हूँ। मेरा मार्गदर्शन करें।''

फिर संस्था से पूरी जानकारी दी गई। कुछ शंकाओं का समाधान किया गया।

फिर बोला कि जी सर वो तो कर लिया, लेकिन मानसिक जप करते समय दो बार **अर्द्धचैतन्य अवस्था** में चला गया। क्या ये योग की सामान्य अवस्था है ? मैं पूरे दिन मानसिक जाप कर रहा हूँ। मुझे वर्षों से नींद की समस्या थी, जो मन निर्मल हो गया। ध्यान लगने से नींद की पूर्ति हो गई।

असीम आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ।

पहले से ही वे कई गुरुओं से जुड़े हुए हैं, लेकिन ऐसा अद्भुत आनंद पहली बार अनुभूत किया है।

**ऑस्ट्रेलिया-23.9.2019**
**श्री मेहुल**

उन्होंने बताया कि कुण्डलिनी जागरण के प्रति मेरी विशेष रूचि है। कई प्रकार के योग किये हैं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ है। अब वे गुरुदेव का संजीवनी मंत्र और ध्यान करना चाहते हैं। ऑनलाईन वीडियो देखे और गुरुदेव के प्रति श्रद्धा प्रकट हुई।

उनका जनवरी 2020 में भारत आने का कार्यक्रम है, तब उन्होंने आश्रम आने की इच्छा प्रकट की।

**नैरोबी ( कैन्या )-**
**23.9.2019**
**नाम-जिज्ञासा**

वाट्सअप पर मैंसेज भेजा कि वह नैरोबी ( कैन्या ) से हैं और यू-ट्यूब पर गुरुदेव के वीडियो देखे हैं। हमें भी ये सिद्धयोग की साधना करनी है।

फिर कहा कि 'मुझे अपनी माँ के शरीर से रोगों की मुक्ति के लिए, ये साधना करनी है।

इस आराधना को कैसे करें ?

इसकी शुरूआत कैसे करें ?

उनको पूरी जानकारी भेज कर समझाया गया तो बोला कि जरूर करेंगे। फिर कई शंकाएँ व्यक्त की जिसका उत्तर दिया गया।

**नोएडा ( उ.प्र )-**
**28.8.2019**
**श्री महेन्द्र सिंह**

-मैंने यू-ट्यूब पर देखकर मंत्र जप और हर रोज 15-15 मिनट सुबह-शाम ध्यान कर रहा हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है। असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। दिनांक 18 सितम्बर को गले का कण्ठ वाला हिस्सा ध्यान के दौरान बहुत ज्यादा खींच गया था फिर वापस आ गया। सिर के ऊपर वाले हिस्से में गुद्गुदी सी पूरे दिन होती रहती है।

मैं शब्दों में ब्यान नहीं कर सकता हूँ। मैं गुरुदेव का प्रचार-प्रसार करना चाहता हूँ। मुझे मार्गदर्शन करें। फिर उनको आश्रम से स्पिरिचुअल साइंस

www.the-comforter.org

मासिक पत्रिका की प्रतियाँ और अन्य प्रचार सामग्री भेजी गई।

**गाजियाबाद ( उ.प्र. )- 26.9.2019**

**श्री जगमोहन शुक्ला-75 वर्ष**

-यू-ट्यूब से गुरुदेव का वीडियो सुनकर मंत्र जप और ध्यान शुरू किया है। वर्षों से धार्मिक क्षेत्र से जुड़ा हूँ, लेकिन अभी तक कुण्डलिनी जागरण और कोई आध्यात्मिक ज्ञान नहीं हुआ है। बहुत सी बीमारियाँ से भी पीड़ित , आर्थिक तंगी आदि का होना बताया। और पूछा कि क्या मंत्र जप और ध्यान से ये सब फायदा हो जाएगा? आश्रम से उनको पूरी जानकारी दी गई।

**हल्दवानी ( उत्तराखाण्ड )- 26.9.2019**

**श्री विजेन्द्र सिंह चौहान- 57 वर्ष**

नगर निगम में सहायक आयुक्त चौहान साहब ने बताया कि पिछले दस दिन से यू-ट्यूब पर गुरुदेव के वीडियो देख रहा हूँ। गुरुदेव के प्रवचन सुनकर मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था। उसमें गुरुदेव ने बताया था कि आज्ञाचक्र पर उनकी तस्वीर देखकर, मंत्र जप के साथ ध्यान करो।

अभी तीन-चार दिन से मैं कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने सोचा कि जो कह रहे हैं उनको अनुभूत करने के लिए मुझे ध्यान करना चाहिए।

**अभी तीन-चार दिन में मुझे जो अनुभूति हुई, मेरे शरीर में जो हलचल हुई, वो मेरी वर्षों की पूजापाठ में कभी नहीं हुआ।**

ढलती उम्र के साथ कई व्याधियों शरीर में लग गई हैं, लेकिन मेरे तीन-चार दिन के अनुभव में मुझे बहुत खुशी मिल रही है। एक नई रोशनी मिली है कि अब मैं इस आराधना से स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन जी सकता हूँ।

**गुरुदेव ने जैसा कहा मैंने वैसा करके देखा तो वैसा हो गया तो मुझे विश्वास हो गया।**

फिर मैंने सोचा कि जो अपना भार कोई ले रहा है तो वो तो गुरु ही हो सकता है और कोई नहीं।

उनकी वाणी में बड़ी शक्ति है। अब मैं मंत्र जप और ध्यान कर रहा हूँ और मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, जैसा कि उन्होंने बताया।। **-साधक**

❖❖❖

# सत्य पथ की यात्रा पर

मैं जादव रमेश, विज्ञान का विद्यार्थी हूँ। मैंने गायत्री की आराधना भी की है। कुछ ज्ञान भी हुआ लेकिन मेरी तड़प शांत नहीं हुई इसलिए मैं आध्यात्मिक ज्ञान के लिए देश में कई जगह गया परंतु यह ज्ञान मुझे कहीं भी नहीं मिला।

मैं एक महीने पहले एक बार **यू-ट्यूब** देख रहा था, उसमें मैंने गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का वीडियो देखा, उसमें मुझे गुरुदेव की संस्था-**अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम** के मोबाईल नम्बर मिल गये। मैंने उस पर कॉल करके जानकारी ली और ध्यान शुरू कर दिया लेकिन एक महीने तक कुछ भी नहीं हुआ। कोई अनुभूति नहीं होने पर भी मैंने हार नहीं मानी और मुझे प्रेरणा हुई कि मुझे एकबार जोधपुर आश्रम जाना चाहिए।

फिर मैंने संस्था में कॉल किया और पूछा कि- मैं एक बार जोधपुर आश्रम आना चाहता हूँ, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है। वहाँ से जवाब मिला कि आप आ सकते हो लेकिन रहने की व्यवस्था अपने स्तर पर करनी पड़ेगी।

मैं दिनांक 19.09.2019 को जोधपुर आश्रम पर आ गया और होटल में रुका। सुबह-शाम आश्रम जाकर ध्यान किया। पहले ही दिन मेरा ध्यान लग गया और मैंने गुरुदेव से प्रार्थना की कि मुझे **समाधि स्थति** में जाना है, यह बोल कर रोज ध्यान लगाना शुरु कर दिया तो आठवें दिन मुझे गुरुदेव ने आशीर्वाद मुद्रा में दर्शन दिये। मैं जिस उद्देश्य से, इतनी दूर से, गुरुदेव के आश्रम में आया था, मेरी वह तमन्ना पूरी हो गई।

वर्तमान में भारत देश में ऐसे गुरुदेव कहीं नहीं है। मेरे को मूलाधार बंध, उड्डियान बंध व जालंधर बंध लगा। सांभवी मुद्रा व सर्वांगासन भी हुआ और ध्यान में बहुत आनन्द आया। अब मैं 27 सितम्बर की शाम को वापस अपने गाँव चला जाऊँगा। ऐसे गुरुदेव को सादर प्रणाम।

**जादव रमेश, उम्र-25 वर्ष**
**गाँव-नागलगीद,**
**जिला-संगारेड्डी ( तेलंगाना )**

अश्विनी अस्पताल, मुम्बई में प्रत्येक रविवार को आयोजित सिद्धयोग शिविर में ध्यान मग्न मरीज। (अगस्त-सितम्बर 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा–गंगापुर सिटी के नवनिर्मित आश्रम का उद्घाटन व मूर्ति स्थापना कार्यक्रम। कार्यक्रम के बाद संजीवनी मंत्र के जप के साथ साधकों ने 15 मिनट ध्यान किया। (12 सितम्बर 2019)

गंगापुर सिटी क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (सितम्बर 2019)

अध्यात्म विज्ञान केन्द्र, जोधपुर की टीम द्वारा राजस्थान के सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में छात्र-छात्राएँ। (26 व 29 से 31 अगस्त 2019)

आर.एस.एस. शाखा नोएडा में सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ध्यान करते हुए स्वयंसेवक। (10 सितम्बर 2019)

छत्तीसगढ़ – सरगुंजा जिले की अम्बिकापुर तहसील के विद्यालय में ध्यान मग्न छात्र–छात्राएँ। (27 अगस्त 2019)

# अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की टीम द्वारा राजस्थान के उदयपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन 22-26 सितम्बर 2019















www.the-comforter.org

# सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

**गुरु-शिष्य** परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन ( जामसर ) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

**गुरु-शिष्य** परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- **आधिदैहिक, आधिभौतिक व आधिदैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन ( **नाश** ) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव हैं, जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

## सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया ( भय ), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू ( बीड़ी, सिगरेट व जर्दा ) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

गतांक से आगे...

# सद्गुरुदेव का प्रवचन

## जीते जी मृत्यु से साक्षात्कार

अब आराधना में मैंने आपको बताया कि आप जब आराधना करोगे तो पातंजलि योग दर्शन में जो सिद्धियाँ वर्णित हैं, वह सब आपको हासिल होंगी। इस योग में अन्दर और बाहर का विकास दोनों एक साथ होता है। आध्यात्मिक चेतना आती है और भौतिक शांति मिलती है। देखिए ! पातंजलि योग दर्शन में चार भाग हैं- समाधि पाद, साधन पाद, विभूतिपाद और कैवल्य पाद। विभूतिपाद तीसरा पाद है, उसमें साधक को क्या-क्या सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, उसका वर्णन आता है। सारी सिद्धियाँ इस आराधना से आपको मिलेंगी तो यह एक ज्ञान प्राप्त करने की बात है।

विभूति पाद में 33 और 36 दो सूत्रों में जिसका वर्णन आता है उस ज्ञान का नाम है-प्रातिभ ज्ञान। ऋषि ने उसको प्रातिभ ज्ञान की संज्ञा दी है। वह स्वतः प्राप्त होता है। आराधना में जब प्रातिभ ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो साधक को छह प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती हैं। उनमें से पहली सिद्धि है-ध्यान व समाधि की स्थिति में अनिश्चित काल के भूत भविष्य को देखना-सुनना **(Unlimited Past and Future)** को देखना सुनना, उसका Self Realization करना। भौतिक साइन्स मानती है इस सिद्धान्त को, स्वीकार कर चुकी है कि जो शब्द बोला गया है, वो ब्रह्माण्ड में रहता है। अगर प्रोपर मशीन हो तो सुना जा सकता है। हमारा योग दर्शन कहता है कि जब शब्द है ब्रह्माण्ड में तो बोलने वाला भी रहा होगा। उसके बिना कैसे आया शब्द, कहाँ से आया ? उसको बोलते हुए देखा, सुना जाना संभव है। आगे कहता है कि वह तो Past है। वह तो फिल्म पहले बन गई है। What is done, is done.( हो गया सो गया ) Undone ( बदला नहीं जा सकता ) नहीं हो सकता। मैं नहीं कह रहा, पातंजलि ऋषि ने विभूतिपाद के 33 और 36 दो सूत्रों में यह बात कही है।

अब ध्यान की स्थिति में, समाधि की स्थिति में आप जब इन चीजों को देखोगे, भविष्य को देखोगे तो भविष्य में होने वाले सारे परिवर्तन देखोगे-जन्मना-मरना, घात-प्रतिघात, घाटा-नफा सारे दिखेंगे तो इस प्रकार आपको अपने कई परिचित लोगों की डेथ दिख गई, मृत्यु दिख गई किस कारण से होगी, उम्र क्या होगी, वह करेक्ट टाइम मालूम नहीं कर सकोगे, वह तो प्रकृति ने अपने अधिकार में रखा है। एक्सीडेंट से होगी कि बीमारी से होगी, क्या होगा ? और वह वैसे ही होती चली जाएंगी क्योंकि मरना तो सभी को है। सब का निश्चित समय है। एक नहीं, सैंकड़ों ऐसी घटनाएँ आपके सामने आएंगी तो बड़ा आश्चर्य होगा।

यह मामला तो गड़बड़ है। यह जो दिख रहा है, वही सत्य हो रहा है और उस वक्त कहीं ख्याल आ गया, यह जा रहे हैं, तेरे को भी जाना है। But Natural ( लेकिन स्वाभाविक ) है ख्याल आएगा ही आएगा तो आप को पता लग जाएगा, कैसे जाओगे ? किस उम्र में जाओगे ? जीते-जी मृत्यु से साक्षात्कार हो जाएगा।

जब दूसरों वाली घटना सही हो रही है तो आप वाली गलत कैसे होगी ? तब फिर आदमी घबरा जाता है, मौत से बहुत डरता है। कोई मरना नहीं चाहता, मगर एक भी न बच पा रहा है। अब जब बच भी नहीं पा रहे हो तो डरते क्यूँ हो ? पर माया ने एक ऐसा आवरण चारों तरफ आपके कर दिया है कि मौत रूपी जो वरदान है, जन्म-मरण के चक्र को छुड़वाता है, आपको उसकी शक्ल बड़ी भयावनी दिखाई देती है। आप उसको स्वीकार नहीं करना चाहते, आप इसी जगत में रहना चाहते हो, मगर फिर भी वह ले जाती है।

जब आदमी को पता लगेगा, मेरी इस तरह से डेथ होगी तो घबरा जाता है। बड़ा गंभीर होता है फिर भगवान् से प्रार्थना करता है, हे भगवान् ! किसी तरह बचा ले। जब मौत सामने आती है तो जीवन भर के किये कराये वह सब सामने आ जाते हैं। दुनिया को झाँसा दे सकता है, अपने आप को कैसे देगा ? जो खोटे किये हैं वह अपनी तस्वीर देखकर मनुष्य घबराता है। वह बड़ा Concentrate हो जाता है। हे भगवान् ! बचा ले जैसे ही Serious हुआ कि कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है। मृत्यु का रहस्य क्लियर हो जाता है। कबीरदास जी ने एक जगह कहा है-

जहाँ मरने से जग डरे, मोरे मन आनन्द।
कब मरीयों कब पाइयों पूरण परमानंद।।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

कहानी....

# अपने धर्म में मरना सर्वोत्तम

## ( एक हिन्दू कन्या का साहसी वृत्तान्त )

सन्1725 की घटना है। भारत सम्राट मुहम्मदशाह दिल्ली के सिंहासन पर आसीन थे। बादशाह का मीरमुंशी एक वैश्य था। सनम, शराब, शतरंज और संगीत की सुहबत से वह मुसलमान हो गया। उसका हिंदू नाम था-**रामजीदास सेठ**। मुसलमानी नाम मिला-**मियाँ अहमदअली**।

रामजीदास की स्त्री मर चुकी थी। घर में केवल एक कन्या थी। नाम था-**किरन**। उसने अपनी कन्या को बहुत समझाया परंतु वह मुसलमान होने पर राज़ी न हुई। अन्त में काजी की कचहरी में अहमद ने अर्जी दी कि **'जिस वक्त मैंने अपना मज़हब तब्दील किया था, उस वक्त मेरी लड़की नाबालिग थी। इस्लामी कानून के मुताबिक मेरे मुसलमान होते ही वह भी मुसलमान हो गयी। अब वह बालिग है इसलिये उसे बाकायदा इस्लाम मज़हब कबूल कर लेना चाहिये। उसे इनकार करने का हक नहीं है मगर वह इनकार करती है। लिहाजा सरकार, सरकारी दबाव से उसे मुसलमान बनाये, यही मेरी दिली तमन्ना है।'**

काज़ी ने किरन को कचहरी में बुलाया। उस षोड्शवर्षीया बाला ने आकर अदालत को जगमगा दिया। लड़की अत्यन्त सुन्दर थी। वह निर्भय खड़ी थी और उसकी त्यौरियाँ चढ़ी हुई थीं।

**काज़ी**-तुम अहमदअली की लड़की हो?

**किरन**-जी नहीं।

**काज़ी**-फिर किसकी हो?

**किरन**-सेठ रामजीदास की।

**काज़ी**-दोनों एक ही तो हैं?

**किरन**-जी नहीं। मेरा बाप तो उसी क्षण मर गया था, जिस क्षण उसने हिंदू-धर्म का त्याग किया था।

**काज़ी**-अहमदअली तुम्हारा बाप नहीं है?

**किरन**-जी नहीं।

**काज़ी**-तुम उसके साथ रहना नहीं चाहती?

**किरन**-जी नहीं।

**काज़ी-किसी हिंदू के घर रहना चाहती हूँ।**

**काज़ी**-लड़की ! गुस्से को थूक दो और समझ से काम लो। तुम्हारे हिंदू-धर्म से हमारा इस्लाम -धर्म बढ़िया है। इस्लाम कहता है कि खुदा एक है-हिंदू-धर्म कहता है कि ईश्वर सैकड़ों हैं !

**किरन**-सैकड़ों नहीं-करोड़ों ! जितने जीव हैं, वे सब वास्तव में ईश्वर हैं, यही हमारे धर्म की शिक्षा है। हिंदू-धर्म कहता है कि ईश्वर के सिवा और कुछ भी नहीं है। जिस प्रकार सूर्य और किरन ! किरन भी तो सूर्य ही है। इसी प्रकार कहने के लिये जीव और ईश दो हैं- वास्तव में एक ही चीज है। हमारी गीता में यही लिखा है-''**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**''

**काजी**-अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो तुम्हारा नाम बजाय किरन के शमाँ रख दिया जाएगा। वज़ीर साहब के लड़के के साथ तुम्हारी शादी करा दी जायेगी। इस वक्त तुम एक 'अनाथ लड़की' हो। फिर-'वज़ीरजादी' कहलाओगी, भिखारिन से रानी बन जाओगी।

**किरन**-अपने धर्म में भिखारिन रहना, पराये धर्म में रानी बनने से ज्यादा अच्छा है। वह **'धर्मप्रियता'** नहीं-वह **'धर्मनिश्चय'** नहीं, जो लोभ या भय से बदला जा सके।

**काज़ी**-जिस वक्त तुम्हारा बाप मुसलमान हुआ था, उस वक्त तुम्हारी क्या उम्र थी?

**किरन**-तेरह साल।

**काज़ी**-रजस्वला हुई थी या नहीं?

**किरन**-जी नहीं।

**काज़ी**-तब तुम उस वक्त नाबालिग थी?

**किरन**-जी हाँ।

**काज़ी**-तब तो तुम इस्लामी कानून की दफा से उसी वक्त मुसलमान हो गई जब तुम्हारा बाप मुसलमान हुआ।

**किरन**-इस्लामी कानून इस्लाम के सिर पर सवार हो सकता है, **हिंदू-धर्म पर नहीं**। मैं इस कानून को नहीं मानती।

**काज़ी**-'इस्लाम -धर्म की तौहीन में इस लड़की को जेल भेजो।'

बेचारी किरन शाही जेलखाने में भेज दी गयी।

यह सनसनीखेज समाचार सारे

दिल्ली शहर में भीषण आग की तरह फैल गया। वैश्य समाज ने कुपित होकर सारा कारोबार बंद कर दिया। बाजारों में हड़ताल कर दी गयी। वैश्य-समाज के नेताओं ने किले के नीचे जाकर धरना दे दिया। शोरगुल सुनकर बादशाह ने खिड़की खोली और पूछा **'क्या मामला है?'** सेठों ने सारी कहानी सुनायी। बादशाह ने कहा-'इसी दरबार में यह मुकदमा पेश होगा, इत्मीनान (भरोसा) रखिये। **''मैं यह बात जानता हूँ कि ज़ोर-जुल्म करने वाली बादशाहत बादल की छाँह की तरह थोड़े ही समय तक टिकती है।''**

लड़की को लेकर सेठ लोग वापस चले गये। दूसरे दिन बादशाह के दरबार में वह लड़की पेश की गयी। काजी भी बुलाये गये। काजी से बादशाह ने पूछा-

**बादशाह**-इस हिंदू लड़की को, जो खुशी से इस्लाम कबूल नहीं करती, क्यों जबरन मुसलमान बनाया जा रहा है?

**क़ाजी**-जहाँपनाह! शहर के कानून से यह लड़की उसी वक्त मुसलमान हो गयी जिस वक्त उसका बाप मुसलमान हुआ। यह उस वक्त नाबालिग थी। रजस्वला नहीं हुई थी।

बादशाह-रजस्वला होना ही बालिग होने का प्रमाण नहीं है। ऐसी भी लड़कियाँ हैं, जो बालिग हैं, मगर रजस्वला नहीं हुई।

**काजी**-गरीबपरवर! जो मुनासिब समझें, हुक्म दें।

**बादशाह**-शरह में यह भी लिखा है कि जबरन किसी को मुसलमान नहीं बनाना चाहिये। इसी दफा के मुताबिक हम इस लड़की को बरी करते हैं। सेठ घनश्यामदासजी को यह लड़की सौंपी जाती है। वे ईमानदार तथा अच्छी चाल-चलन के आदमी हैं। वे जहाँ चाहें, इस कन्या का विवाह कर सकते हैं। लिहाजा मुकदमा खारिज और मिसिल दाखिल दफ्तर !

कन्या सेठजी के साथ चली गयी।

दूसरे दिन थी जुम्मे की नमाज़। जामा मस्जिद में एक लाख मुसलमान जमा हुए। बादशाह भी गये थे। मुल्ला लोगों ने बादशाह को आड़े हाथों लिया और उनके फैसले को तार-तार कर दिया। इस्लामी बादशाही वास्तव में मौलवी लोगों की बादशाहत थी।

बादशाह ने सोचा कि कहीं मामला बिगड़ न जाय, **कहीं ऐसा न हो कि मुझे तख्त और ताज़ से भी हाथ धोना पड़े इसलिए नरम पड़ गये और बोले**-आखिर आप लोग इस मामले में क्या चाहते हैं?

**मौलवी लोग**-यह मामला मज़हब का है- राजनीति का नहीं। इस मामले का आखिरी फैसला 'जामा मस्जिद' की अदालत यानी 'अंजुमने-मौलाना' ही कर सकती है।

**बादशाह**-तो अब क्या होना चाहिये?

**मौलवी लोग**-उस लड़की को फिर हिरासत में ले लीजिये। कल उसकी पेशी जुम्मा मस्जिद की अदालत में होगी। आयन्दा (आज के बाद) धर्म मामले में आप दखल न किया करें।

किरन को फिर जेल में बंद कर दिया गया।

एक टाट पर बैठी किरन अपनी किस्मत को कोस रही थी। कटार लिये एक जल्लाद आया। किरन खड़ी हो गयी और बोली-

**किरन**-तुम कौन हो?

**जल्लाद**-मैं जल्लाद हूँ।

**किरन**-यहाँ क्यों आये?

**जल्लाद**-तुमको मारने ।

**किरन**-किसके हुक्म से?

**जल्लाद**-मौलाना लोगों के हुक्म से।

**किरन**-क्या हुक्म हुआ है मेरे लिये?

**जल्लाद**-न रहे बाँस न बजे बाँसुरी।

**किरन**-बादशाह के हुक्म के खिलाफ?

**जल्लाद**-**जामा मस्जिद की अदालत बादशाहों को बनाने और बिगाड़ने वाली अदालत है।**

**किरन**-अच्छी बात है।

**जल्लाद**-मुसलमान हो जाओ या मरने को तैयार हो जाओ!

**किरन**-'मरने को तैयार हूँ। अपना हिंदू-धर्म नहीं त्यागूँगी।' जल्लाद ने कटार तानी।

**किरन**-तुम मत मारना। मेरा बदन एक यवन नहीं छू सकता।

**जल्लाद**-फिर कौन मारेगा?

**किरन**-मैं खुद मर जाऊँगी। यह कटार मुझे दो।

**जल्लाद**-खूब! यह कटार मैं तुमको दे दूँ, ताकि यह तुम्हारे सीने में न जाकर मेरे सीने में घुस जाये? चालाक तो तुम कम नहीं हो।

**किरन**-मुझे कटार भी नहीं चाहिये।

**जल्लाद**-तो फिर कैसे मरोगी?

**किरन**-ऐसे............................!

कहकर उस कन्या ने अपना सिर इतने जोर से पत्थर की दीवार में दे मारा कि वह खरबूजे की तरह फट गया। खून का फव्वारा कोठरी भर में बरसने लगा।

**जल्लाद**-उफ़...............ओह !........

इस भयानक मौत को देखकर जल्लाद भी काँप गया। बोला-'शाबाश! हिंदू लड़की! शाबाश! हिंदू-धर्म के सिवाय इस तरह से मरना और कौन जानता है!'

शहर के सेठों ने लाश माँग ली। रथी को खूब सजाया गया। कहते हैं कि उस कन्या के शव पर जनता ने इतने फूल, फल, मेवा, पताशे और रूपये-पैसे न्यौछावर किये जितने किसी शव पर नहीं हुए थे !

सन् 1725 ईस्वी की गरमी का मौसम था। किरन ने हकीकत में धर्मप्रियता जीत ली थी। हिंदू-संस्कृति का यही आदर्श है कि 'प्राण भले ही चले जाय, अपना धर्म न जाने पाये ! क्योंकि जो धर्म का हनन करता है, धर्म उसका हनन कर डालता है।' धर्म पर न्यौछावर होकर किरन देवी अपना नाम सुनहरे अक्षरों में अमर कर गयीं हैं।

ऐसे हजारों उदाहरण हमारे देश के इतिहास में वर्णित हैं जहाँ स्वाभिमान और धर्म की रक्षा के लिए, अपने प्राण न्यौछावर किये पर असत्य को नहीं स्वीकारा।

**आज हिन्दुओं के जगने का समय है। भारत की मैकॉले शिक्षा ने हमारे धर्म पर चोट की है। संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट किया गया है । चारों ओर से धर्म रसातल में जा रहा है। जब भी धर्म पर संकट आया है, भगवान् ने मानव देह धारण कर संकट का शमन किया है। आज भी वह आद्य शक्ति धरा पर है।**

ऐसे में हमें अपने असली स्वरूप को पहचानने के लिए सनातन धर्म के मर्म को समझने की आवश्यकता है।

जो हम सद्‌गुरुदेव द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर जान सकते हैं

❖❖❖

# प्रार्थना

हे प्रभो ! तू अपनी ही अभिव्यक्ति का सर्वशक्तिमान स्वामी है। इन यंत्रों को वर दे कि वे बहुत संकरे चौखटों में से, बहुत कठोर और सामान्य सीमाओं में से बच निकलें। तेरी अनंत शक्ति के एक परमाणु को भी कार्य में परिणित करने के लिए मानव संभावनाओं की सारी समृद्धि की जरूरत होती है......

बंद दरवाजों को खोल, अवरूद्ध फव्वारों को उछलने दे ताकि तेरी भावपूर्णता और तेरी सुंदरता की बाढ़ सारे जगत् पर फैल जाए। वर दे कि प्राचुर्य और तेजस्विता, उदारता और मोहकता, कोमलता और महानता, विभिन्नता और बल फैल जाए क्योंकि प्रभु की व्यक्त होने की इच्छा है।

हे मेरे मधुर स्वामी, तू हमारी नियतियों का एकाधिराज है; तू अपनी निजी अभिव्यक्ति का सर्वशक्तिमान स्वामी है।

यह सारा जगत् , यह सब प्राणी और परमाणु तेरे हैं। उन्हें रूपान्तरित कर और प्रदीप्त कर।

श्रीमां

❖❖❖

www.the-comforter.org

# Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

You have small children, a wife, a mother. They all are completely dependent on you. It is correct that if you get the curtain removed, your condition will be exactly the same as you just saw but these people don't have any knowledge about it. When you will leave all of them in the prime of their youth, their call for you in distress full of misery and pain will lead to your downfall. This way by becoming "Yogbhrasht, it will become the reason for your downfall. Now do as you think is right.

After listening to this, I was in great dilemma. I asked, 'Can worship and prayer also lead to such a fierce outcome?' I had never ever imagined it. The voice came, the path of 'Karma' (Karamgati) is very intense, no one can understand it. After thinking for some time when I could not understand what I should be doing in future, I asked the same unseen voice," I am not able to understand what I should be doing so please guide me and I am ready to do exactly that."

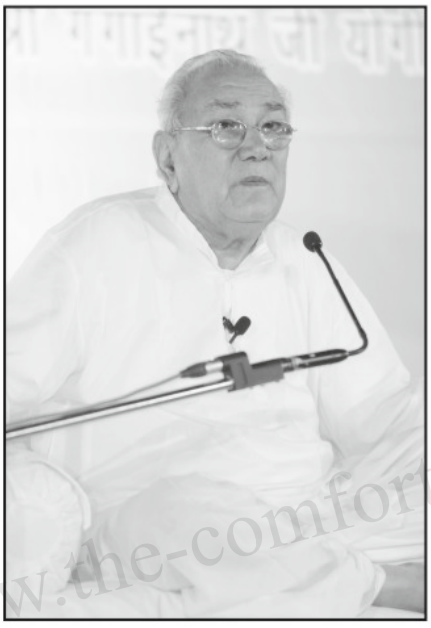

This way as a result of my praying, the voice from the other room said" Now that the curtain has moved, it will be removed at its prescribed time so stop moving it now. Do your duty as per the requirement in the field of your work." With



these words the scene disappeared, and I woke up. Morning had set in so after completing my daily chores, after placing a garland on Bhagwan Shri Krishna's picture, I took leave of him. This happened in the last days of the year 1974.

After this till 1983, I actively worked at various positions for Worker's Union and Rajasthan Farmer's Union. But the way I had developed complete faith in the miracles of the spiritual world, my attention was constantly focussed there. I had almost become used to doing most of the work of physical world through the guidance of the spiritual powers. This was the reason that I was rarely unsuccessful in my work. Whatever work I undertook, I was successful in it.

In 1982 I had got a clear message to separate myself from the worker's union but I didn't pay much attention to it. As a result of not obeying the order, I had to face a lot of failures and disappointments in the physical world whereas earlier whatever work I undertook, I used to be successful in it.

To be cont...

गतांक से आगे...

# योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

## कठिनाई में

ध्यान के समय यदि यह कठिनाई उपस्थित होती है कि सभी प्रकार के विचार मन में घुस आते हैं तो यह विरोधी शक्तियों के कारण नहीं होता, बल्कि यह मानव-मन के साधारण स्वभाव के कारण होता है। सभी साधकों को यह कठिनाई होती है और बहुतों के साथ तो यह बहुत लंबे समय तक लगी रहती है। इससे छुटकारा पाने के कई उपाय हैं। उनमें एक यह है कि विचारों को देखा जाये और यह निरीक्षण किया जाये कि वे मानव-मन के किस स्वभाव को प्रकट कर रहे हैं, पर उन्हें किसी प्रकार की स्वीकृति न दी जाये और उन्हें तब तक दौड़ते रहने दिया जाये जब तक वे स्वयं ही थककर रुक न जायें-इसी उपाय का अवलंबन लेने की सलाह विवेकानंद ने अपने राजयोग में दी है। दूसरा उपाय है इन विचारों को इस प्रकार देखना मानों वे अपने न हों, उनसे पीछे हटकर साक्षी पुरुष के रूप में अवस्थित होना और उन्हें अनुमति देने से इंकार करना-इस पद्धति में ऐसा मानते हैं कि विचार बाहर से, प्रकृति से आ रहे हैं और उन्हें ऐसे अनुभव करना होता है मानों वे पथिक हों जो मन के प्रदेश से होकर जा रहे हैं और जिनसे न तो अपना कोई संबंध हो और न जिनके विषय में अपनी कोई दिलचस्पी हो। इस तरह करने से प्रायः यह परिणाम होता है कि कुछ समय के बाद मन दो भागों में विभक्त हो जाता है, एक भाग तो वह होता है जो मनोमय साक्षी पुरुष होता है, जो देखा करता और पूर्ण रूप से अक्षुब्ध तथा अचंचल बना रहता है और दूसरा भाग वह होता है जो देखने का विषय होता है, प्रकृति-भाग होता है और जिसमें से होकर विचार आया-जाया करते हैं या जिसमें विचरण करते हैं। उसके बाद साधक इस प्रकृति-भाग को भी निश्चल-नीरव या शांत करने का प्रयास कर सकता है। एक तीसरा उपाय है, एक सक्रिय पद्धति भी है, जिसमें साधक यह देखने की चेष्टा करता है कि विचार कहां से आ रहे हैं और उसे यह पता चलता है कि वे उसके अंदर से नहीं, बल्कि मानों उसके सिर के बाहर से आ रहे हैं; अगर साधक उन्हें इस प्रकार आते हुए देख ले तो फिर उनके भीतर घुसने से पहले ही उन्हें एकदम बाहर फेंक देना होता है। यह पद्धति संभवतः सबसे अधिक कठिन है और इसे सब लोग नहीं कर सकते, पर यदि इसे किया जा सके तो निश्चल-नीरवता प्राप्त करने का यह सबसे अधिक सीधा और सबसे अधिक शक्तिशाली मार्ग है।

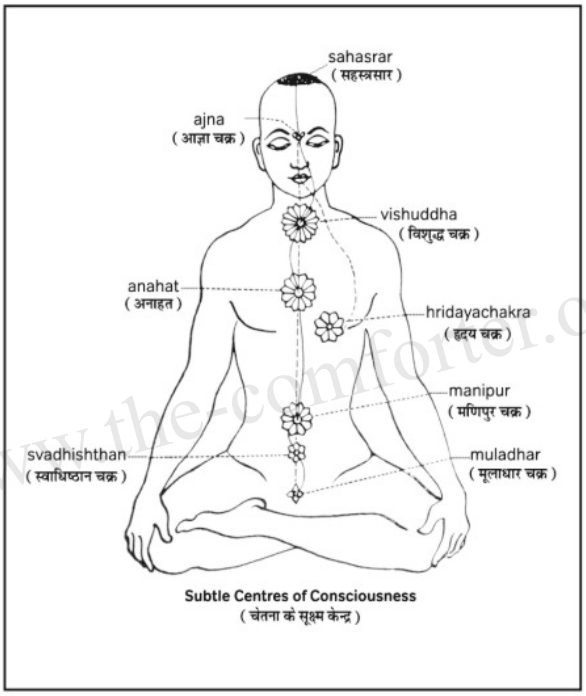



Subtle Centres of Consciousness
( चेतना के सूक्ष्म केन्द्र )

यह आवश्यक है कि तुम अपने अंदर की अशुद्ध वृत्तियों को देखो और जानो क्योंकि वे ही तुम्हारे दुःख के मूल हैं और अगर तुम्हें उनसे छुटकारा पाना हो तो तुम्हें उनका लगातार त्याग करना ही होगा। परंतु तुम बराबर अपने दोषों और अशुद्ध वृत्तियों का ही चिंतन मत किया करो। तुम उस बात पर अधिक अपना ध्यान एकाग्र करो जो तुम्हें होना है, जो तुम्हारा आदर्श है और यह विश्वास बनाये रखो कि जब यही तुम्हारा लक्ष्य है तब इसे पूरा होना ही होगा और यह अवश्य पूरा होगा। बराबर दोषों और अशुद्ध वृत्तियों को देखते रहने से चित्त उदास होता है और श्रद्धा दुर्बल होती है। अपनी दृष्टि को किसी वर्तमान अंधकार की अपेक्षा आनेवाले प्रकाश की ओर अधिक लगाओ। श्रद्धा, प्रसन्नता और अंतिम विजय में विश्वास-ये सब चीजें ही सहायता करती हैं, ये प्रगति को अधिक सहज और तीव्र बनाती हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

# योगियों की आत्मकथा

उद्घाटन दिवस के थोड़े दिनों बाद मैं उस' अनुसन्धान केन्द्र में फिर से गया। उस महान वनस्पतिशास्त्रज्ञ को अपने वचन का स्मरण था। वे मुझे अपनी शांत प्रयोगशाला में ले गये।

''अब मैं इस फर्न के पौधे को क्रेस्कोग्राफ लगाता हूँ, इसकी गतिविधियों का अनेक गुना परिवर्धन चित्र उभरेगा। इसी मात्रा में यदि घोंघे की रेंगने की क्रिया को परिवर्धित किया जाय तो घोंघा एक्सप्रेस ट्रेन की गति से चलता दिखायी देगा !''

मेरी दृष्टि उत्सुकतावश पर्दे पर लगी हुई थी, जहाँ फर्न की परिवर्धित छाया दिख रही थी। सूक्ष्मातिसूक्ष्म जैव-क्रियाएँ भी अब स्पष्ट दिखायी दे रही थीं। मेरी मंत्रमुग्ध आँखों के सामने वह फर्न का पौधा, अत्यंत धीरे-धीरे बढ़ रहा था। बोस महाशय ने पौधे की नोंक को धातु की एक छोटी-सी छड़ से छुआ। पर्दे पर चल रहा मूक-नृत्य हठात् रुक गया, जैसे ही छड़ हटायी वैसे ही उस की लयबद्ध थिरक पुनः शुरू हो गयी।

''तुमने देखा कैसे तनिक-सा भी बाह्य हस्तक्षेप संवेदनशील ऊत्तकों के लिये बाधक है,'' बोस महाशय ने कहा।'' अब देखो; मैं इसे क्लोरोफॉर्म दूँगा और फिर उसका प्रभाव नष्ट करने वाली औषधि भी। क्लोरोफॉर्म के प्रभाव ने विकास को पूर्णतः रोक दिया, उसका प्रभाव नष्ट करने वाली औषधि ने उसे पुनः शुरू कर दिया।

पर्दे पर दिखने वाले विकास के संकेतों ने मुझे किसी सिनेमा के कथानक से भी अधिक तन्मयता के साथ जकड़ रखा था। बोस महाशय (यहाँ खलनायक की भूमिका में) ने उस फर्न के एक हिस्से में एक तीक्ष्ण औजार घुसा दिया; आकस्मिक फड़फड़ाहट ने दर्द का संकेत दिया। जब उन्होंने पौधे के तने को ब्लेड से अंशतः काट दिया तब छाया में तीव्र छटपटाहट दिखायी दी, फिर मृत्यु की अंतिम स्तब्धता में वह शांत हो गया।

''एक विशाल वृक्ष को पहले क्लोरोफॉर्म देकर फिर उसका स्थानान्तरण करने में मैंने सफलता प्राप्त कर ली। साधारणतया वनों के ये राजा स्थानान्तरित करने के कुछ ही दिन बाद मर जाते हैं।'' उस जीवन रक्षक युक्ति कौशल का वर्णन करते हुए बोस महाशय अत्यंत प्रसन्नता के साथ मुस्करा रहे थे।''मेरे सूक्ष्मग्राही यंत्रों के रेखाचित्रों ने सिद्ध कर दिया है कि पेड़-पौधों में रस संचार-प्रणाली होती है; प्राणियों में जैसे रक्तसंचार होता है, वैसे ही पेड़-पौधों में रस संचार होता है। पेड़-पौधों में रस की ऊर्ध्वगति को केवल कोशिका आकर्षण (Capillary attraction) सदृश किसी यांत्रिक क्रिया के आधार पर स्पष्ट नहीं किया जा सकता, जैसा कि सामान्यतया प्रयास किया जाता है। क्रेस्कोग्राफ ने इसे सजीव कोशिकाओं की क्रिया के रूप में दर्शाया है। पेड़ के अन्दर से लम्बी गोलाकार नली चलती है जिसमें क्रमिक वृतों में सिकुड़ने वाली लहरें उठती रहती हैं जो हृदय का काम करती हैं ! हम जितनी ही अधिक गहराई में जाकर देखेंगे उतनी ही अधिक स्पष्टता से इस सत्य का प्रमाण मिलता जाता है कि इस बहुविध प्रकृति का प्रत्येक रूप एक ही सूत्र में बँधा है।''

''मैं तुम्हें टिन के एक टुकड़े पर कुछ प्रयोग दिखाता हूँ। धातुओं की प्राणशक्ति उत्तेजना के प्रभाव में अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया दिखाती है। स्याही के निशान विभिन्न प्रतिक्रियाओं को चिह्नाकित करेंगे।''

मैं तल्लीन होकर आण्विक संरचना की लक्षणस्वरूप तरंगों को अंकित करने वाले रेखाचित्र (Graph) को देखने लगा। जब प्रोफेसर साहब ने टिन को क्लोरोफॉर्म लगाया तब कंपन-लेखन थम गया। जब धीरे-धीरे उस टिन को सामान्य अवस्था लौट आयी, तब वह पुनः शुरू हो गया। अब बोस महाशय ने एक विषैला रसायन लगाया। टिन के छटपटाते छोर के साथ-साथ सुई ने अद्भुत रूप से रेखाचित्र पर मृत्यु की सूचना अंकित कर दी। वैज्ञानिक महोदय ने कहाः

''बोस यंत्रों ने प्रदर्शित कर दिया है कि कैंची और मशीनरी में प्रयुक्त इस्पात सदृश धातु भी थकते हैं और बीच-बीच में विश्राम मिलने से उनमें पुनः ताजगी और कार्यक्षमता आ जाती है। विद्युत् प्रवाह या अति भारी दबाव से धातुओं में जीवन की धड़कन को गम्भीर क्षति पहुँचती है या वह धड़कन सदा के लिये रुक भी सकती है।''

संदर्भ-योगी कथामृत, परमहंस योगानंद

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

# भगवान् की अवतरण-प्रणाली

मानव की धारणा के अनुसार अवतार-संबंधी यह भावना ठीक ही जँचती है क्योंकि यदि मानवप्राणी अपनी प्रकृति को इतना उन्नत कर ले कि उसे भागवत सत्ता के साथ एकत्व अनुभव हो और वह भगवान् के चैतन्य, प्रकाश, शक्तिऔर प्रेम का एक वाहक-सा बन जाय, उसका अपना संकल्प और व्यक्तित्व भगवान् के संकल्प और उनकी सत्ता में घुल-मिलकर अपना पृथकत्व खो दे।

-क्योंकि यह भी एक मानी हुई आध्यात्मिक अवस्था है कि मानव-जीव के अन्दर, उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को अधिकृत करके, भगवान् का ही संकल्प, भगवान् की ही सत्ता और शक्ति, उन्हींके प्रेम, प्रकाश और चैतन्य प्रतिबिंबित हो सकते हैं, और यह जरा भी असंभव नहीं है। और, इस प्रकार की अवस्था मनुष्य का केवल आरोहण द्वारा दिव्य जन्म और दिव्य स्वभाव को प्राप्त होना ही नहीं है, बल्कि उसमें दिव्य पुरुष का मानव में अवतरण भी है, यह एक अवतार है।

परन्तु गीता इसके भी आगे चलती है। वह साफ-साफ कहती है कि भगवान् स्वयं जन्म लेते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरे बहुत से जन्म बीत चुके और अपने शब्दों से यह स्पष्ट कर देते हैं कि वे ग्रहणशील मानव-प्राणी में उतर आने की बात नहीं कह रहे हैं, बल्कि भगवान् के ही बहुत से जन्म लेने की बात कह रहे हैं क्योंकि यहाँ वे ठीक **सृष्टिकर्ता** की भाषा में बोल रहे हैं और इसी भाषा का प्रयोग वे वहाँ करेंगे जहाँ अपनी जगत्-सृष्टि की बात कहेंगे। यद्यपि मैं प्राणियों का अज अविनाशी ईश्वर हूँ तो भी मैं अपनी माया से अपने-आपको सृष्ट करता हूँ''-अपनी प्रकृति के कार्यों का अधिष्ठाता होकर यहाँ ईश्वर और मानव या पिता या पुत्र की, दिव्य मनुष्य की कोई बात नहीं है, बल्कि केवल भगवान् और उनकी प्रकृति की बात है।

भगवान् अपनी ही प्रकृति के द्वारा मानव-आकार और प्रकार में उतरकर जन्म लेते और यद्यपि वे स्वेच्छा से मनुष्य के आकार, प्रकार और साँचे के अन्दर रहकर कर्म करना स्वीकार करते हैं, तो भी उसके अन्दर भागवत चेतना और भागवत शक्ति को ले आते हैं।और शरीर के अन्दर प्रकृति के कर्मों का नियमन वे

उसकी अंत:स्थित और ऊर्ध्वस्थित आत्मा-रूप से करते हैं, **''प्रकृति स्वां अधिष्ठाय ।''**

ऊपर से वे सदा ही शासन करते हैं, क्योंकि इसी तरह वे समस्त प्रकृति का शासन चलाते हैं, और मनुष्य-प्रकृति भी इसके अंतर्गत है; अन्दर से भी वे स्वयं छिपे रहकर सारी प्रकृति का शासन करते हैं, अंतर यह है कि अवतार में वे अभिव्यक्त रहते हैं, प्रकृति के ईश्वररूप में भगवान् की सत्ता का, अंतर्यामी का सचेतन ज्ञान रहता है, यहाँ प्रकृति का संचालन ऊपर से उनकी गुप्त इच्छा के द्वारा 'स्वर्गस्थ पिता की प्रेरणा के द्वारा नहीं होता, बल्कि भगवान् अपने प्रत्यक्ष प्रकट संकल्प से ही प्रकृति का संचालन करते हैं। यहाँ किसी मानव मध्यस्थ के लिये कोई स्थान नहीं है क्योंकि यहाँ भूतानां ईश्वर अपनी प्रकृति ( प्रकृतिं स्वां ) का आश्रय लेकर, किसी जीव की विशिष्ट प्रकृति का नहीं, मानव-जन्म के जामे को ओढ़ लेते हैं।

बात बड़ी विलक्षण है, जल्दी समझ में आनेवाली नहीं, मनुष्य की बुद्धि के लिए इसे ग्रहण कर लेना आसान नहीं; इसका कारण भी स्पष्ट है--अवतार स्पष्ट रूप से मनुष्य जैसे ही होते हैं। अवतार के सदा दो रूप होते हैं। भागवत रूप और मानव-रूप भगवान् मानव-प्रकृति को अपना लेते हैं, उसे सारी बाह्य सीमाओं के साथ भागवत चैतन्य और भागवत शक्ति की परिस्थिति, साधन और कारण तथा दिव्य जन्म और दिव्य कर्म का एक पात्र बना लेते हैं और यही होना चाहिए; वरना अवतार के अवतरण का उद्देश्य ही पूर्ण नहीं हो सकता।

अवतरण का उद्देश्य यही दिखलाना है कि मानव-जन्म, मनुष्य की सब सीमाओं के रहते हुए भी दिव्य जन्म और दिव्य कर्म का साधन और करण बनाया जा सकता है, अभिव्यक्त दिव्य चैतन्य के साथ मानव-चैतन्य का मेल बैठाया जा सकता है, उसका धर्मान्तर करके उसे दिव्य चैतन्य का पात्र बनाया जा सकता है और उसके साँचे को रूपांतरित करके उसके प्रकाश, प्रेम, सामर्थ्य और पवित्रता की शक्तियों को ऊपर उठाकर उसे दिव्य चैतन्य के अधिक समीप लाया जा सकता है।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित
**'गीता प्रबंध'** पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

# ज्ञान का लक्ष्य

–महर्षि श्री अरविन्द

परम्परागत ज्ञान मार्ग के पीछे एक प्रभुत्वपूर्ण आध्यात्मिक अनुभव अवस्थित है, जो इसकी परित्याग और प्रत्याहार रूपी विचार-प्रक्रिया को उचित सिद्ध करता है। यह अनुभव गंभीर, तीव्र और निश्चयोत्पादक है और जिन लोगों ने मन के सक्रिय घेरे को कुछ हद तक पार करके क्षितिज रहित आन्तरिक आकाश में प्रवेश कर लिया है, उन सबको यह समान रूप से प्राप्त होता है। यह मुक्ति का एक महान् अनुभव है, यह हमारे अन्दर विद्यमान किसी ऐसी वस्तु के बारे में हमारी चेतनता है।

जो जगत् तथा इसके समस्त रूपों, आकर्षणों, लक्ष्यों, प्रसंगों और घटनाओं के पीछे तथा बाहर अवस्थित है, शान्त, निर्लिप्त, उदासीन, असीम, निश्चल तथा मुक्त है। यह हमारे ऊपर अवस्थित किसी ऐसी अवर्णनीय एवं अगम वस्तु की ओर हमारी ऊर्ध्वदृष्टि है, जिसमें हम अपने व्यक्तित्व के विलोप के द्वारा प्रवेश कर सकते हैं। यह सर्वव्यापक सनातन साक्षी पुरुष की उपस्थिति है, उस अनन्त या कालातीत सत्ता का बोध है, जो हमारी सम्पूर्ण सत्ता के महामहिम निषेध के स्तर से हमें उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखती है और जो अकेली ही एकमात्र सद्वस्तु है।

यह अनुभव अपनी सत्ता के परे स्थिरतापूर्वक दृष्टिपात करनेवाले आध्यात्मीकृत मन की उच्चतम **ऊर्ध्वगति** है। जो इस मुक्ति में से नहीं गुजरा, वह मन और इसके पाशों से पूर्णतया मुक्त नहीं हो सकता, परन्तु कोई भी सदा के लिये इस अनुभव पर रुके रहने के लिये बाध्य नहीं। यद्यपि यह महान् है, फिर भी यह मन का अपने से तथा अपनी कल्पना में आ सकने वाली सभी चीजों से परे की किसी वस्तु का एक अत्यन्त प्रबल अनुभव मात्र है। यह परमोच्च निषेधात्मक अनुभव है, परन्तु इसके परे एक अनन्त चेतना का समस्त विपुल प्रकाश है, एक असीम ज्ञान, एक भावात्मक चरम परम उपस्थिति है।

**आध्यात्मिक ज्ञान का विषय है परब्रह्म, भगवान्, अनन्त एवं निरपेक्ष सत्ता।** यह परब्रह्म हमारी वैयक्तिक सत्ता तथा इस विश्व के साथ सम्बन्ध रखता है और यह जीव तथा जगत् दोनों से परे भी है। विश्व और व्यक्ति वह नहीं हैं, जो हमें प्रतीत होते हैं क्योंकि हमारा मन और इन्द्रियाँ हमें इनका जो विवरण देती हैं, वह एक मिथ्या विवरण होता है। एक अपूर्ण रचना तथा एक क्षीण एवं भ्रान्तिपूर्ण प्रतिमूर्ति होता है, जब तक कि वे उच्चतर अतिमानसिक एवं अतीन्द्रिय ज्ञान की शक्ति से प्रकाशित नहीं हो जातीं। किन्तु फिर भी विश्व और व्यक्ति हमें जो कुछ प्रतीत होते हैं, वह उनके वास्तविक स्वरूप की ही एक प्रतिमूर्ति है,-एक ऐसी प्रतिमूर्ति जो अपने से परे, अपने पीछे अवस्थित वास्तविक सत्य की ओर संकेत करती है।

हमारा मन और हमारी इन्द्रियाँ हमारे सम्मुख वस्तुओं के जो मूल्य प्रस्तुत करती हैं, उनके संशोधन के द्वारा ही सत्य ज्ञान उदित होता है, और सर्वप्रथम तो यह उस उच्चतर बुद्धि की क्रिया के द्वारा प्राप्त होता है जो अज्ञानयुक्त इन्द्रिय मानस तथा सीमित स्थूल बुद्धि के निर्णयों को यथासम्भव आलोकित तथा संशोधित करती है; समस्त मानवीय ज्ञान-विज्ञान की पद्धति यही है। परन्तु इसके परे एक ऐसा ज्ञान एवं सत्य-चेतना है, जो हमारी बुद्धि को अतिक्रम कर जाती है और हमें उस सत्य प्रकाश के भीतर ले आती है, जिसकी यह एक विचलित रश्मि है। वहाँ शुद्ध तर्कबुद्धि की अमूर्त परिभाषाएँ और मन की रचनाएँ विलुप्त हो जाती हैं अथवा अन्तरात्मा की प्रत्यक्ष दृष्टि में एवं आध्यात्मिक अनुभव के अति महत् सत्य में परिणत हो जाती हैं।

यह ज्ञान निरपेक्ष सनातन की ओर मुड़ कर जीव और जगत् को दृष्टि से ओझल कर सकता है परन्तु यह उस सनातन से इह-सत्ता पर दृष्टिपात भी कर सकता है। जब हम ऐसा करते हैं तो हमें पता चलता है कि मन और इन्द्रियों का अज्ञान तथा मानव जीवन के सब वृथा प्रतीत होने वाले व्यापार चेतन सत्ता के निरर्थक विक्षेप नहीं थे, न ही कोई क्षुद्र भ्रान्ति थे।

यहाँ वे इस रूप में आयोजित किये गये थे कि वे अनन्त से उद्भूत होनेवाले आत्मा की स्वाभिव्यक्ति के लिये एक स्थूल क्षेत्र का काम करें, इस विश्व की परिभाषाओं में उसके आत्म-विकास एवं आत्मोपलब्धि के लिये भौतिक आधार बन सकें। यह सच है कि अपने-आप में उनका तथा यहाँ की सभी चीजों का कुछ भी अर्थ नहीं, और उनके लिये पृथक् अर्थों की परिकल्पना करना माया में निवास करना है; परन्तु परम सत् में उनका एक परम अर्थ है, निरपेक्ष ब्रह्म में उनकी एक निरपेक्ष शक्ति है।

संदर्भ-'योग समन्वय'
पुस्तक पृष्ठ-289

गतांक से आगे...

# योग के बारे में

प्रकृति-अगर जो क्रिया संपादित की जानी है उसकी यही प्रकृति है कि वर्तमान मानव सांचे को पूर्ण नहीं करना बल्कि इसे तोड़कर एक उच्चतर प्ररूप की ओर चलना है तो वह कौन-सी शक्ति और प्रक्रिया है जो इस काम को पूरा करेगी ? यह प्रकृति क्या चीज है जिसके बारे में हम यूं धारा प्रवाह बोलते हैं ? हम उसके बारे में यूं बोलते हैं मानो वह शक्तिशाली और सचेतन चीज है जो जीती और योजना बनाती है !

हम उसे लक्ष्य का गौरव देते हैं, उस लक्ष्य का अनुसरण करने के लिये प्रज्ञा और वह जिसका अनुसरण करती है उसे संपादित करने की शक्ति रखने का श्रेय देते हैं। क्या विश्व की वास्तविकताएँ हमारी इस भाषा को न्यायसंगत ठहराती हैं या यह केवल अमानवीय चीजों पर मानव रूप और बुद्धिशून्य प्रक्रियाओं पर बुद्धि की क्रिया आरोपित करने की हमारी चिरकालिक आदत है ?

ये चीजें इसलिये होती हैं क्योंकि उन्हें होना चाहिये। इसलिये नहीं कि वे इच्छा करती और किसी मूक, अंध और जड़ आवश्यकता के कारण यह भव्य व्यवस्थित विश्व पैदा करती हैं जो अपने मूल और अपनी प्रकृति में बुद्धिमान लोगों के लिये कल्पनातीत था। अगर ऐसा है तब तो इस अंध, जड़ शक्ति ने एक ऐसी चीज पैदा की है जो उससे ज्यादा ऊँची है। कोई ऐसी चीज जो कल्पना के रूप में भी उसके वक्ष में उपस्थित न थी और किसी तरह उसकी न थी, हम यह नहीं समझ सकते कि सत्ता क्या है और प्रकृति क्या है ? इसलिये नहीं कि हम बहुत छोटे और सीमित है बल्कि इसलिये कि हम सत्ता और प्रकृति से बहुत ऊपर हैं। हमारी बुद्धि उस अंधकार में एक प्रकाशमय सनक है जिसमें से उसे असंभव रूप से पैदा किया गया है क्योंकि उस अँधकार में कोई चीज इसके सृजन के कारण के रूप में ठीक नहीं बैठती।

अगर जड़, भौतिक द्रव्य में मन अन्तर्निहित नहीं था -- और उस हालत में वह केवल जड़ दीखता ही है -- तो भौतिक द्रव्य के लिये मन को पैदा करना असंभव होता। लेकिन चूंकि यह बात हमें एक असंभवता की ओर ले जाती है इसलिये यह सच नहीं हो सकती। तब हमें यह मानना चाहिये कि अगर भौतिक द्रव्य जड़ है तो मन भी जड़ है। बुद्धि एक भ्रान्ति है।

भौतिक संघातों के धक्के के सिवाय और कुछ नहीं है। वे जड़ भौतिक के स्पन्दन और उसकी प्रतिक्रियाएँ पैदा करते हैं जो अपने-आपको बुद्धि के चमत्कारों में अनूदित कर लेते हैं। ज्ञान केवल भौतिक के साथ भौतिक का संबंध है और मूलभूत रूप से परमाणुओं के एक दूसरे से टकराने या चरागाह में दो सांडों के एक दूसरे से टकराने से भिन्न या प्रकृति अनन्त सत्ता में चेतना की शक्ति है, जो यांत्रिक जगत् को देखती है जिसमें चेतना वस्तुओं का एक अपवादिक रूप है वह अपूर्ण सामग्री के आधार पर किया गया उतावला निर्णय है, श्रेष्ठ नहीं है।

इसमें लगे हुए भौतिक कर्ता भिन्न हैं और भिन्न आभास पैदा करते हैं इसलिये हम एक सींगवाले सिर के दूसरे से पीछे हटने को ज्ञान या बुद्धि की क्रिया नहीं कहते परन्तु जो चीज होती है वह मूल रूप से है एक ही। बुद्धि अपने-आप जड़ और यांत्रिक तथा केवल शारीरिक गति का शारीरिक परिणाम है और उसमें कोई अन्तरात्मा या मन के अतिप्राचीन अर्थों में कोई अन्तरात्मिक या मानसिक चीज नहीं है।

आधुनिक वैज्ञानिक बुद्धिवाद की यही सृष्टि है। हां उसे वैज्ञानिकों की भाषा से भिन्न भाषा में रखा गया है ताकि उसके न्यायसंगत परिणाम और तात्पर्य स्पष्ट हो जाएं पर यह है विश्व का आधुनिक प्रभावकारी वर्णन है।

इस वर्णन में किसी वस्तु की प्रकृति उसके संघटन, उस संघटन में समाहित गुण और इन गुणों द्वारा निश्चित किये गये कार्य के नियम हैं। उदाहरण के लिये लोहा किन्हीं तात्विक पदार्थों से बना है और अपने संघटन के परिणामस्वरूप उसमें कठोरता आदि कुछ गुण हैं, अमुक परिस्थितियों में वह गुणों के कारण अमुक तरह से प्रतिक्रिया करेगा।

इसी विश्लेषण को एक बड़े पैमाने पर लागू करने से हम देखते हैं कि विश्व किन्हीं जड़ शक्तियों का संघटन है जो किन्हीं भौतिक द्रव्यों में काम कर रही हैं।

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

# एक विचार

''एक विचार ले लो। उसी विचार के अनुसार अपने जीवन को बनाओ; उसी को सोचो, उसी का स्वप्न देखो और उसी पर अवलम्बित रहो। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, स्नायुओं और शरीर के प्रत्येक भाग को उसी विचार से ओतप्रोत होने दो। और दूसरे सब विचारों को अपने से दूर रखो। यही सफलता का रास्ता है और यही वह मार्ग है, जिसने महान् धार्मिक पुरुषों का निर्माण किया है।''

-स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

शक्ति को अपने पास से दूसरे में **संप्रेषित कर सकने की क्षमता हो,** और दूसरी आवश्यकता यह है कि जिसको वह शक्ति संप्रेषित की जाय, उसमें उसको ग्रहण करने की क्षमता हो।

**बीज सजीव हो और खोत अच्छी तरह से जुता हुआ हो। जब ये दोनों शर्तें पूरी हो जाती हैं, तब धर्म की आश्चर्यजनक उन्नति होती है।** 'धर्म का वक्ता अलौकिक हो और श्रोता भी वैसा ही हो।' और दोनो अलौकिक या असाधारण होंगे, तभी अत्युत्तम आत्मिक विकास सम्भव है, अन्यथा नहीं ।ऐसे ही लोग यथार्थ गुरु हैं और ऐसे ही लोग यथार्थ शिष्य। अन्य तो मानो धर्म का केवल खिलवाड़ करते हैं।

वे थोड़ा सा बौद्धिक प्रयास तथा कुछ **कोतुहलपूर्ण** शंकाओं का समाधान करते रहते हैं। उनके बारे में हम कह सकते हैं कि वे मानो धर्म-क्षेत्र की केवल बाहरी परिधि पर खड़े हैं। पर उसकी भी कुछ न कुछ सार्थकता है-धर्म की सच्ची प्यास उससे जाग्रत हो सकती है, समय आने पर ही सब कुछ प्राप्त होता है। **प्रकृति का यह एक रहस्यपूर्ण नियम है कि खोत तैयार होते ही बीज मिलता है। ज्यों ही आत्मा को धर्म की आवश्यकता होती है, त्योंही धार्मिक शक्ति को देने वाला कोई न कोई आना ही चाहिए।** 'खोज करने वाले पापी की भेंट खोज करने वाले उद्धारक से हो ही जाती है।' जब ग्रहण करनेवाली आत्मा की आकर्षण-शक्ति पूर्ण और परिपक्व हो जाती है, उस समय उस आकर्षण का उत्तर देने वाली शक्ति आना होता है।

पर मार्ग में बड़े खतरे भी हैं। एक खतरा यह है कि कहीं ग्रहीता आत्मा ( शिष्य ) अपने क्षणिक आवेश को यथार्थ धार्मिक पिपासा न समझने लगे। ऐसा हमें स्वयं अपने में भी मिलेगा।

**हमारे जीवन में प्रायः ऐसा घटित होता है कि जिस व्यक्ति पर हमारा बहुत प्रेम है, वह अचानक मर जाता है, उसकी मृत्यु से हमें क्षण भर के लिए धक्का पहुँचता है। हम सोचते हैं कि यह संसार हाथ से निकला जा रहा है, हमें संसार से कुछ उच्चतर वस्तु चाहिए और अब हम धार्मिक होने जा रहे हैं। पर कुछ दिनों के बाद वह तरंग निकल जाती है और हम जहाँ के तहाँ पड़े रह जाते हैं। हमें अनेक बार इन आवेशों में धर्म की सच्ची पिपासा का भ्रम हो जाता है।**

पर जब तक इन क्षणिक आवेशों में हमें इस प्रकार का भ्रम होता रहेगा, तब तक हमारी आत्मा की वह सतत् यथार्थ पिपासा जाग्रत नहीं होगी और हमें **'शक्ति-दाता'** ( गुरु ) प्राप्त न होंगे।

अतःजब हमारे मन में यह शिकायत उठे कि हमें सत्य की प्राप्ति नहीं हुई है, यद्यपि हम उसकी प्राप्ति के लिए इतने व्याकुल हैं, उस समय हमारा प्रथम कर्तव्य यह होना चाहिए कि हम आत्म-निरीक्षण करें और पता लगायें कि क्या हमें वास्तव में उस ( सत्य या धर्म ) की पिपासा है ? अकसर तो यही दिखेगा कि हमीं उसके योग्य नहीं हैं, हमें धर्म की आवश्यकता ही नहीं है, हम में अभी आध्यात्मिक पिपासा ही नहीं है।

**'शक्तिदाता'** गुरु के लिए तो और भी अधिक कठिनाईयाँ होती हैं। बहुतेरे तो ऐसे हैं, जो स्वयं अज्ञान में डूबे रहने पर भी अपने अन्तःकरण में अहंकार के कारण अपने को सर्वज्ञ समझते हैं। इतना ही नहीं, वे दूसरों का भार अपने पर उठाना चाहते हैं और इस प्रकार **'अन्धा अन्धे को राह दिखावे'** वाली कहावत चरितार्थ करते हुए अपने साथ उन्हें भी गड्ढे में ले गिरते हैं।

संसार में ऐसों की ही भरमार है। हर कोई गुरु होना चाहता है, हर भिखारी लक्ष मुद्रा का दान करना चाहता है। जैसे वे भिखारी हँसी के पात्र हैं, वैसे ही ये गुरु भी।

तब प्रश्न यह है कि गुरु की पहचान हमें कैसे हो ? सूर्य को दिखाने के लिए मशाल या दीपक की आवश्यकता नहीं होती। सूर्य को देखने के लिए हम मोमबत्ती नहीं जलाते। सूर्य का उदय होते ही उसके उदय होने का ज्ञान हमें स्वभावतः ही हो जाता है। उसी प्रकार जब हमें सहायता देने के लिए किसी **जगद्गुरु** का आगमन होता है, तब आत्मा को अपने स्वभाव से ही ऐसा लगने लगता है कि उसे सत्य की प्राप्ति हो गयी।

**सत्य स्वयंसिद्ध होता है। उसे सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।** सत्य स्वयं प्रकाश होता है। वह हमारी प्रकृति की अन्तरात्मा गुहाओं तक को भेद देता है और सारी सृष्टि चिल्ला उठती है, **'यही सत्य है।'** महान् आचार्य ऐसे ही होते हैं। पर हम तो इनकी अपेक्षा छोटे आचार्यों से भी सहायता पा सकते हैं। किन्तु जिनके पास से हम दीक्षा लेना चाहते हैं या जिन्हें हम गुरु बनाना चाहते हैं, उनके विषय में ठीक

www.the-comforter.org

या उचित राय कायम कर सकने के लिए पर्याप्त **अन्तःशक्ति** हममें बहुधा नहीं होती; इसलिए कुछ कसौटियों की आवश्यकता हैं। जिस प्रकार शिष्य में कुछ लक्षणों का रहना आवश्यक है, उसी प्रकार गुरु में भी कुछ लक्षण होने चाहिए।

पवित्रता, यथार्थ ज्ञान-पिपासा और धैर्य- ये लक्षण शिष्य में अवश्य हों। अपवित्र आत्मा कभी धार्मिक नहीं हो सकती। सबसे बड़ी आवश्यकता इसी पवित्रता की है। सब प्रकार की पवित्रता नितान्त आवश्यक है। दूसरी आवश्यकता इस बात की है कि शिष्य को ज्ञान-प्राप्ति की यथार्थ पिपासा हो। **प्रश्न यही है कि चाहता कौन है? हम जो चाहते हैं, वही मिलता है, यह पुराना नियम है।** जो चाहता है, वह पाता है। धर्म की चाह बड़ी कठिन बात है। इसे हम साधारणतः जितना सरल समझते हैं, उतना सरल नहीं है। फिर हम यह तो सदा भूल ही जाते हैं कि व्याख्यान सुनना या पुस्तकें पढ़ना, धर्म नहीं है। धर्म तो एक सतत् संघर्ष है। स्वयं अपनी प्रकृति का दमन करते रहना, जब तक उस पर विजय प्राप्त न हो जाय, तब तक निरन्तर लड़ते रहने का नाम ही धर्म है। यह एक या दो दिन, कुछ वर्षों या जन्मों का प्रश्न नहीं है। इसमें तो सैकड़ों जन्म बीत जायँ तो भी हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। सम्भव है, हमें अपनी प्रकृति पर तुरन्त विजय मिल जाय, या सम्भव है, सैकड़ों जन्म तक हमें यह विजय प्राप्त न हो, पर हमें उसके लिए तैयार रहना आवश्यक है। जो शिष्य इस भावना के साथ अग्रसर होता है, उसको सफलता मिलती है।'' और इसी जन्म में।

वर्तमान में संपूर्ण नियमों, सिद्धांतों और परम्पराओं को दरकिनार कर, केवल समर्थ सद्गुरु की शरण ले लो। वही गीता वाली बात-**'सब धर्मों को त्याग कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा, यह मैं दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ।'**

अर्थात् वर्तमान में वह चाहे पापी, अधर्मी, मासांहारी, दुराचारी या किसी भी प्रवृति का हो, इस दर्शन को पा सकता है। यदि उसने इस पथ पर एक या दो कदम भी रख दिये तो वह स्वतः ही सत्य की ओर खिंचा चला आएगा।

अतः प्रथम प्रयास सद्गुरु की शरणागत हो जाओ।

**सम्पादक**

www.the-comforter.org

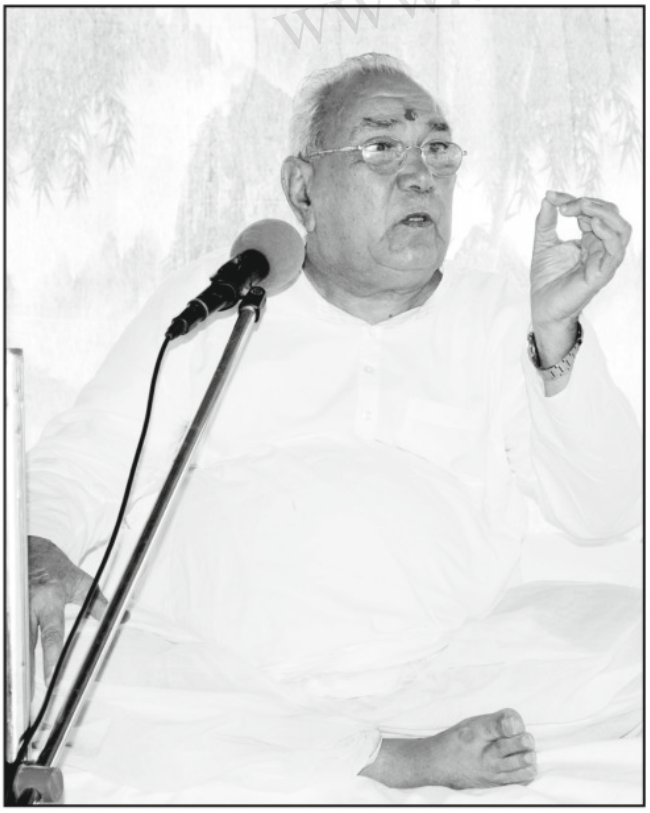

# ''कुण्डलिनी जागरण''

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, अम्बा, पार्वती, भवानी, योगमाया व सरस्वती आदि विभिन्न नामों से पूजते हैं, वही चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढ़े तीन फेरे (कुण्डली) लगाकर सुषुप्त (सोई हुई) अवस्था में रहती है, जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है।

इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

संदर्भ-कुण्डलिनी जागरण 'शीर्षक,
सिद्धयोग बड़ी पुस्तक से

# क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

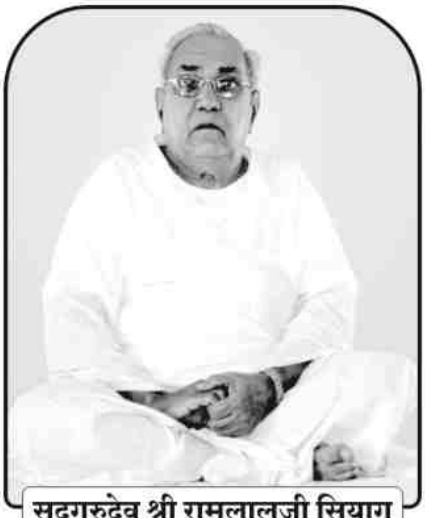

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

# प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

# ध्यान करके देखें।

## ► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

## ► Method of Meditation ◄

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

*For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks*

www.the-comforter.org

### शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

**गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें**–07533006009

**सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।**

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

**E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org**

## सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (2 व 4 सितम्बर 2019)

**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुण्डाना (पीपाड़ शहर, जोधपुर) ♦ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तापू (ओसियां, जोधपुर)**

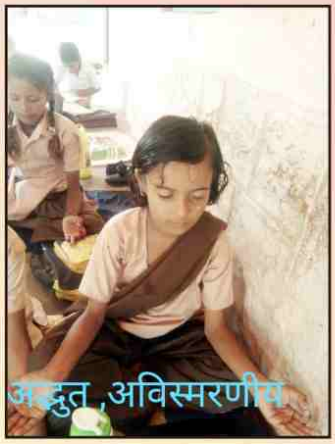

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

# अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की टीम द्वारा राजस्थान के सीकर जिले के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (27 व 28 अगस्त 2019)

## अद्भुत सिद्धयोग कुण्डलिनी जागरण

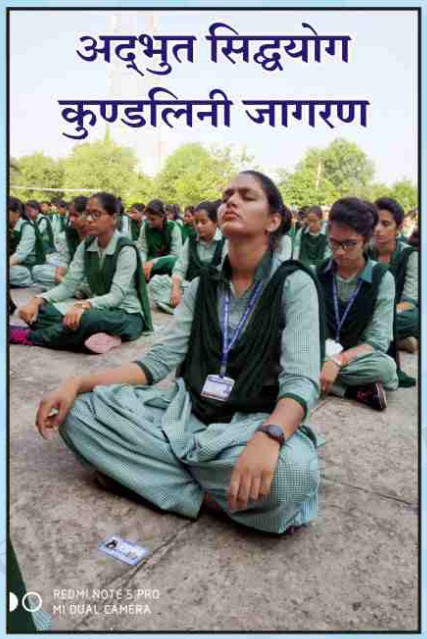

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

**Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस**

**अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी